(३२) उससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह (तआला) पर झूठ बोले[1] तथा सत्य (धर्म) उसके पास आये तो उसे असत्य बताये ?[2] क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक नहीं है ?

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

(३३) तथा जो लोग सत्य (धर्म) लाये[3] तथा जो उसे सत्य जाने[4] यही लोग संयमी हैं।

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

(३४) उनके लिए उनके प्रभु के पास (प्रत्येक) वह वस्तु है जो ये चाहें,[5] सदाचारियों का यही बदला है।[6]

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

---

[1]अर्थात दावा करे कि अल्लाह की संतान है अथवा उसका साझी अथवा उसकी पत्नी है जबकि वह इन सभी से पवित्र है।

[2]जिसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) है, ईश्वरादेश तथा अनिवार्य कर्म हैं, पुनर्जीवन का विश्वास, अवैध कर्मों से बचाव है तथा ईमानवालों के लिए शुभ-सूचना तथा काफ़िरों के लिए चेतावनियाँ हैं। यह धर्म तथा धर्मविधान जो महा आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आये उसे वह मिथ्या (झूठा) बताये।

[3]इससे अभिप्राय इस्लाम के संदेष्टा महा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो सत्यधर्म लेकर आये। कुछ के निकट यह सामान्य है, तथा इससे प्रत्येक वह व्यक्ति अभिप्राय है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) का आमन्त्रण देता तथा अल्लाह के धर्म-विधान की ओर लोगों का मार्गदर्शन करता है।

[4]कुछ ने इससे तात्पर्य आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु अन्हु लिया है जिन्होंने सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि की तथा उन पर ईमान लाये। कुछ ने इसे भी सामान्य रखा है जिस में सभी ईमानवाले सम्मिलित हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (ईशदूत होने पर) विश्वास (ईमान) रखते हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा मानते हैं।

[5]अर्थात अल्लाह तआला उनके पाप भी क्षमा कर देगा तथा उनके पद भी ऊँचे कर देगा क्योंकि प्रत्येक मुसलमान की अल्लाह से यही आकांक्षा होती है। इसके अतिरिक्त स्वर्ग में जाने के पश्चात प्रत्येक मनचाही वस्तु भी मिलेगी।

[6]مُحسنين का एक अर्थ तो यह है जो पुण्यकारी हैं, दूसरा जो विशुद्धता के साथ इबादत

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) ताकि अल्लाह (तआला) उनसे उनके बुरे कर्मों को मिटा दे तथा जो पुण्य कार्य उन्होंने किये हैं उनका उत्तम बदला प्रदान करे।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

(३६) क्या अल्लाह (तआला) अपने भक्तों के लिए पर्याप्त नहीं ?[1] ये लोग आपको अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों से डरा रहे हैं, तथा जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे उसका मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं।[2]

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा जिसे अल्लाह मार्गदर्शन प्रदान कर दे उसे कोई कुमार्ग करने वाला नहीं।[3] क्या अल्लाह (तआला) प्रभावशाली एवं बदला लेने वाला नहीं है ?[4]

(वंदना) करते हैं। जैसे हदीस में إحسان (एहसान) की यह परिभाषा दी गयी है «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ». "तुम अल्लाह की इबादत ऐसे करो कि मानो तुम उसे देख रहे हो। यदि यह कल्पना संभव न हो तो मन में यह अवश्य रहे कि वह तुम्हें देख रहा है।" तीसरा, जो लोगों के साथ उपकार तथा सदव्यवहार करते हैं। चौथा, प्रत्येक पुण्य कर्म को भले ढंग से एकाग्रता एवं विनम्रता से तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत (आचरण) के अनुसार करते हैं। अधिकता की जगह उसकी 'श्रेष्ठता' का ध्यान रखते हैं।

[1]इससे अभिप्राय आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। कुछ के विचार में यह सामान्य है। सभी अम्बिया (ईशदूत) तथा ईमानवाले इसमें सम्मिलित हैं। भावार्थ यह है कि आप को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से डराते हैं परन्तु जब अल्लाह आप का सहाय तथा पक्षधर है तो आपका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। वह उन सबके मुकाबले में आप को पर्याप्त है।

[2]जो उस पथभ्रष्टता से निकालकर संमार्ग पर लगा दे।

[3]जो उसको संमार्ग से निकालकर कुमार्ग के गड्हे में डाल दे अर्थात मार्गदर्शन तथा गुमराही अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहे विपथ कर दे तथा जिसको चाहे मार्गदर्शन प्रदान कर दे।

[4]क्यों नहीं, वास्तव में है, इसलिए कि यदि यह लोग कुफ्र (इंकार) तथा विरोध से न रूके तो निश्चय ही वह अपने मित्रों के पक्ष में इनसे बदला लेगा तथा उन्हें शिक्षाप्रद दुष्परिणाम से दोचार करेगा।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) यदि आप इनसे पूछें कि आकाश तथा धरती को किसने पैदा किया है तो नि:संदेह ये यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। आप उनसे कहिए कि भला यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो यदि अल्लाह तआला मुझे हानि पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसकी हानि को हटा सकते हैं अथवा अल्लाह तआला मुझ पर कृपा करना चाते हो क्या ये उसकी कृपा को रोक सकते हैं, (आप) कह दें कि अल्लाह (महान) मुझे पर्याप्त है।[1] भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।[2]

قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) कह दीजिए कि हे मेरे समुदाय के लोगो, तुम अपने स्थान पर कर्म किये जाओ मैं भी कर्म कर रहा हूँ,[3] शीघ्र ही तुम जान लोगे।

مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ

(४०) कि किस पर अपमानित करने वाला प्रकोप आता है[4] तथा किस पर (स्थाई मार

[1]कुछ कहते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उपरोक्त प्रश्न उनके सामने पेश (प्रस्तुत) किया तो उन्होंने कहा कि वस्तुत: वह अल्लाह के कर्मलेख को टाल नहीं सकते। हाँ, वह सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करेंगे, जिस पर यह टुकड़ा अवतरित हुआ कि मुझे तो मेरे विषय में अल्लाह ही पर्याप्त है।

[2]जब सब कुछ उसी के अधिकार में है तो फिर दूसरों पर भरोसा करने से क्या लाभ ? अत: विश्वासी जन उसी पर भरोसा करते हैं, उसके सिवाय किसी पर उनका भरोसा नहीं।

[3]अर्थात यदि तुम मेरी तौहीद (अद्वैत) की दावत (आमन्त्रण) को स्वीकार नहीं करते जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है तो ठीक है, तुम्हारी इच्छा, तुम अपनी स्थिति पर रहो जिस पर तुम हो, मैं उस स्थिति पर रहता हूँ जिस पर मुझे अल्लाह ने रखा है।

[4]जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि सत्य पर कौन है तथा असत्य पर कौन ? इससे तात्पर्य सांसारिक यातना है जैसा कि बद्र के रण में हुआ। काफ़िरों के सत्तर व्यक्ति हत तथा सत्तर ही बन्दी हुए यहाँ तक कि मक्का विजय के बाद प्रभुत्व एवं अधिपत्य भी मुसलमानों को प्राप्त हो गया जिसके पश्चात काफ़िरों के लिए अपमान तथा अवहेलना

عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝٤٠

एवं) स्थाई दण्ड होता है ?[1]

إِنَّآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ لِلنَّاسِ بِٱلْحَقِّ ۖ فَمَنِ ٱهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ۝٤١

(४१) आप पर हमने सत्य के साथ यह किताब लोगों के लिए अवतरित की है, तो जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आ जाये उसके अपने लिए (लाभ) है तथा जो भटक जाये उसके भटकने का (भार) उसी पर है, आप उनके उत्तरदायी नहीं ।[2]

ٱللَّهُ يَتَوَفَّى ٱلْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَٱلَّتِى لَمْ تَمُتْ فِى مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ

(४२) अल्लाह ही आत्माओं को उनकी मृत्यु के समय[3] तथा जिनकी मृत्यु नहीं आयी उन्हें उनकी नींद के समय हरण कर लेता है,[4]

के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रह गया ।

[1]इससे तात्पर्य नरक का दण्ड है जिसमें काफ़िर सदा फंसे रहेंगे ।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्कावासियों के कुफ़्र पर दुराग्रह बहुत भारी लगता था, इसमें आप को सांत्वना दी गई है कि आप का कर्तव्य मात्र किताब को वर्णन कर देना है जो हमने आप पर अवतरित की । आप पर उन्हें मार्ग पर लाने का दायित्व नहीं । यदि वह संमार्ग अपना लेंगे तो उसमें उन्हीं का लाभ है और यदि ऐसा न करेंगे तो स्वयं उन्हीं की हानि होगी । وكيل, का अर्थ भारवाहक तथा उत्तरदायी है अर्थात आपके ऊपर उन्हें मार्ग दर्शा देने का भार नहीं है । आगामी आयत में अल्लाह अपने पूर्ण सामर्थ्य एवं विचित्र कारीगरी की चर्चा कर रहा है जिसका अवलोकन इन्सान नित्य दिन करता है । वह यह है कि जब वह सो जाता है तो उसकी आत्मा अल्लाह की आज्ञा से जैसे निकल जाती है उसके ज्ञान तथा संवेदन की शक्ति समाप्त हो जाती है तथा जब वह जागता है तो आत्मा उसमें पुन: भेज दी जाती है जिससे उसका संवेदन अपने स्थान पर आ जाता है । हां, जिसका जीवनकाल समाप्त हो चुका होता है । उसकी आत्मा वापस नहीं आती तथा वह मौत की गोद में चला जाता है । इसको कुछ व्याख्याकारों ने बड़ी मौत तथा छोटी मौत भी कहा है ।

[3]यह महाकाल (बड़ी मृत्यु) है कि आत्मा निकाल ली जाती है फिर वापस नहीं आती ।

[4]अर्थात जिनकी मौत का समय अभी नहीं आया है तो सोते समय उनकी आत्मा भी निकाल कर लघु मौत से दोचार कर दिया जाता है ।

الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

फिर जिन पर मृत्यु का आदेश हो चुका है उन्हें तो रोक लेता है[1] तथा अन्य (आत्माओं) को एक निर्धारित समय तक के लिए छोड़ देता है,[2] चिन्तन करने वालों के लिए इसमें निश्चित रूप से बहुत-सी निशानियाँ हैं ।[3]

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) क्या उन लोगों ने अल्लाह तआला के अतिरिक्त (अन्यों को) सिफ़ारिशी नियुक्त कर रखा है ? (आप) कह दीजिए कि चाहे वे कुछ भी अधिकार न रखते हों तथा न बुद्धि रखते हों ।[4]

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) कह दीजिए कि सभी सिफ़ारिशों का स्वामी अल्लाह ही है ।[5] समस्त आकाशों एवं धरती का राज्य उसी के लिए है, तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे ।

---

[1]यह वही बड़ी मृत्यु है जिसकी चर्चा अभी की गई है कि उसमें आत्मा रोक ली जाती है ।

[2]अर्थात जब तक उन का निर्धारित समय नहीं आता उस समय तक के लिए उनकी आत्मायें वापस होती रहती हैं । यह लघु मृत्यु है । यही विषय सूर: अनआम ६० तथा ६१ में वर्णित किया गया है । फिर भी वहाँ लघुकाल (छोटी मृत्यु) की चर्चा पहले तथा महाकाल की बाद में है जबकि यहाँ उसके विपरीत है ।

[3]अर्थात यह आत्मा निकालना तथा वापस भेजना अर्थात मारना तथा जीवन प्रदान करना इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह महान प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है तथा वह प्रलय के दिन मुर्दों को भी जीवन अवश्य प्रदान करेगा ।

[4]अर्थात सिफ़ारिश करना तो कहाँ, इन्हें तो सिफ़ारिश के अर्थ तथा भाव का भी पता नहीं क्योंकि वह पत्थर हैं अथवा निर्बोध ।

[5]अर्थात सिफ़ारिश के सभी प्रकार का अधिकार मात्र अल्लाह को है । उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा । फिर एक अल्लाह ही कि इबादत क्यों न की जाये ताकि वह प्रसन्न हो जाये तथा सिफ़ारिश के लिए कोई सहारा ढूँढने की आवश्यकता ही न रह जाये ।

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा जब अल्लाह अकेले का वर्णन किया जाये तो उन लोगों के हृदय घृणा करने लगते हैं [1] जो आख़िरत में आस्था नहीं रखते, तथा जब उसके अतिरिक्त (अन्यों) का वर्णन किया जाये तो उनके हृदय स्पष्टत: प्रफुल्लित हो जाते हैं।[2]

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) (आप) कह दीजिए कि हे अल्लाह आकाशों एवं धरती के पैदा करने वाले, गुप्त एवं प्रकट के जानने वाले, तू ही अपने भक्तों में उन बातों का निर्णय करेगा जिनमें वे उलझ रहे थे।[3]

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ

(४७) तथा यदि अत्याचारियों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है तथा उसके साथ

---

[1]अथवा कुफ़्र तथा घमंड अथवा संकीर्णता का संवेदन (एहसास) करते हैं। अभिप्राय यह है कि मुशरेकीन (मिश्रणवादियों) से जब यह कहा जाये कि पूज्य केवल एक ही है तो उनके दिल यह मानने को तैयार नहीं होते।

[2]हाँ, जब यह कहा जाता कि अमुक अमुक भी पूज्य हैं अथवा वह भी तो अल्लाह के पुनीत बन्दे हैं, वह भी तो कुछ अधिकार रखते हैं, वह भी संकटहारी हैं तथा आवश्यकता पूरी करते हैं तो यह मुशरेकीन प्रफुल्ल हो जाते हैं। आस्थाभ्रष्टों की आज यही स्थिति है। जब उनसे कहा जाता है कि केवल "हे अल्लाह मदद" कहो, क्योंकि अल्लाह के सिवाय कोई सहायता करने वाला नहीं तो खिन्न हो जाते हैं, यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है। परन्तु जब "या अली मदद" अथवा "या रसूल मदद" कहा जाये, इसी प्रकार अन्य मृतों से सहायता माँगी तथा गुहार की जाये, जैसे "या शेख़ अब्दुल क़ादिर शैअन लिल्लाह" आदि तो फिर उनके दिल की कलियाँ खिल जाती हैं।

[3]हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को तहज्जुद की नमाज़ के प्रारम्भ में यह पढ़ा करते थे।

«اللَّهُمَّ! رَبَّ جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَإِسْرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ، اهْدِنِي لِمَا اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ، إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ»

(सहीह मुस्लिम किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन)

جَمِيعًا وَمِثْلَهُۥ مَعَهُۥ لَٱفْتَدَوْا۟ بِهِۦ مِن سُوٓءِ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُم مِّنَ ٱللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا۟ يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾

उतना ही और हो, तो भी बुरे दण्ड के बदले में क़यामत के दिन ये सब कुछ दे दें,[1] तथा उनके समक्ष अल्लाह की ओर से वह प्रकट होगा जिसका अनुमान भी उन्हें न था।[2]

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा जो कुछ उन्होंने किया था उसकी बुराईयाँ उन पर खुल जायेंगी[3] तथा जिसके साथ वे उपहास करते थे वह उन्हें आ घेरेगा।[4]

فَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ

(४९) मनुष्य को जब कोई कष्ट पहुँचता है तो हमें पुकारता है[5] फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई सुख प्रदान कर दें तो कहने लगता

---

[1]परन्तु फिर भी वह स्वीकार नहीं होगा जैसाकि दूसरे स्थान पर स्पष्ट है :

﴿فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ ٱلْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ ٱفْتَدَىٰ بِهِۦٓ﴾

"वह धरती भर सोना भी बदले में दे दें तो वह स्वीकार्य न होगा।" (*आले-इमरान-९१*)

इसलिए कि :

﴿وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ﴾

"वहाँ बदला अंगीकार नहीं किया जायेगा।" (*अल-बक़र:-४८*)

[2]अर्थात यातना की कठोरता तथा उसका भय एवं उसके प्रकार तथा रूप ऐसे होंगे कि कभी उनके ध्यान में न आये होंगे।

[3]अर्थात दुनिया में वे जिन निषेधों तथा पापों को करते थे उसका दण्ड उनके आगे आ जायेगा।

[4]वह यातना उन्हें घेर लेगी जिसे वह संसार में असंभव समझते थे, इसलिए उनकी हँसी उड़ाते थे।

[5]यह जाति के अनुसार मानव की चर्चा है। अर्थात इन्सानों की बहुसंख्यक की दशा यह है कि जब उनको रोग, भूक अथवा कोई अन्य दुख पहुँचता है तो उससे मुक्ति पाने के लिए अल्लाह से प्रार्थनायें करता है तथा उसके आगे गिड़गिड़ाता है।

إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍۭ ۚ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

है कि यह तो मैं मात्र अपनी बुद्धि के कारण प्रदान किया गया हूँ।[1] बल्कि यह परीक्षा है,[2] परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अनजान हैं।[3]

قَدْ قَالَهَا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) इनसे पूर्व के लोग भी यही बात कह चुके हैं तो उनकी कार्यवाही उनके कुछ काम न आयी।[4]

فَأَصَابَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ ۚ وَٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْ هَٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

(५१) फिर उनके समस्त कुकर्म[5] उन पर आ पड़े, तथा इनमें से भी जो पापी हैं उनके किये हुए कुकर्म भी अब उन पर आ पड़ेंगे, ये (हमें) पराजित कर देने वाले नहीं।[6]

أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ

(५२) क्या उन्हें यह ज्ञान नहीं कि अल्लाह (तआला) जिसके लिए चाहे जीविका बढ़ा

---

[1]अर्थात सुख मिलते ही उद्दण्डता एवं उग्रता का मार्ग अपना लेता है तथा कहता है कि इसमें अल्लाह का क्या अनुग्रह। यह तो मेरी चतुराई का परिणाम है या जो ज्ञान तथा गुण मेरे पास है उसके कारण यह सुख-सुविधायें प्राप्त हुई हैं अथवा मुझे यह जानकारी थी कि यह वस्तुयें मुझे मिलेंगी क्योंकि अल्लाह के निकट मेरा बहुत स्थान है।

[2]अर्थात बात वह नहीं है जो तू समझ रहा है अथवा बता रहा है, अपितु यह वरदान तेरी परीक्षा के लिए है कि तू कृतज्ञता दिखाता है अथवा कृतघ्नता।

[3]इस बात से कि यह अल्लाह की ओर से ढील तथा परीक्षा है।

[4]जिस प्रकार क़ारून ने भी कहा था परन्तु अन्ततः वह अपने कोषों सहित भूमि में धँसा दिया गया। مَا أَغْنَىٰ में مَا, प्रश्नवाची भी हो सकता है तथा नकारात्मक भी। दोनों प्रकार से सही है।

[5]कुकर्म से अभिप्राय उनकी बुराईयों का प्रतिकार (बदला) है। इनको बुराईयों के सदृश होने के कारण बुराईयाँ कहा गया है अन्यथा बुराई का बदला बुराई नहीं है। जैसे ﴿وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا﴾ में है (फ़तहुल क़दीर)

[6]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है। तथा ऐसा ही हुआ, यह भी विगत जातियों की भाँति अकाल, हत्या तथा क़ैद आदि से दोचार हुये। अल्लाह की ओर से आये इन प्रकोपों को वह रोक न सके।

لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

देता है तथा तंग (भी) । ईमानवालों के लिए इसमें बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं ।[1]

قُلْ يَٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

(५३) (मेरी ओर से) कह दो कि हे मेरे बन्दो ! जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की कृपा से निराश न हो जाओ, नि:सन्देह अल्लाह (तआला) समस्त पापों को क्षमा कर देता है । वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील अत्यन्त कृपालु है ।[2]

---

[1]अर्थात जीविका के विस्तार एवं संकुचन में भी अल्लाह की एकता के प्रमाण हैं अर्थात इससे विदित होता है कि सृष्टि में मात्र उसी का अधिकार तथा आदेश चलता है । उसकी योजना प्रभावी एवं लागू है । इसीलिए वह जिसको चाहता है सविस्तार जीविका प्रदान करता है तथा जिसको चाहता है कंगाल एवं गरीब बनाकर रखता है । उसके इस निर्णय में जो उसकी हिक्मत एवं इच्छा पर निर्भर है कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता है न उसमें परिवर्तन कर सकता है । फिर भी यह निशानियाँ मात्र ईमानवालों ही के लिये हैं क्योंकि वही इस पर चिंतन-मनन करके उससे लाभ प्राप्त करते हैं ।

[2]इस आयत में अल्लाह की क्षमा के विस्तार का वर्णन है । إسراف (इसराफ़) का अर्थ है पापों की अधिकता तथा उसमें अति । "अल्लाह की दया से निराश न हो" का अर्थ है कि ईमानलाने अथवा तौबा (क्षमा-याचना) से पहले जितने भी पाप किये हों इन्सान यह न समझे कि मैं तो बड़ा पापी हूँ, मुझे अल्लाह कैसे क्षमा करेगा ? बल्कि सच्चे दिल से यदि ईमान को स्वीकार करेगा अथवा शुद्ध क्षमा-याचना करेगा तो अल्लाह तआला (परमेश्वर) सब पापों को क्षमा कर देगा । आयत के अवतरण के कारण से यही भावार्थ सिद्ध होता है । कुछ काफ़िर तथा मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) थे जिन्होंने अधिकता से हत्या एवं व्यभिचार किया था । यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा कि आप का धर्म सही है परन्तु हम लोग बड़े पापी हैं । यदि हम ईमान लायें तो क्या वह सभी क्षमा कर दिये जायेंगे ? उस पर यह आयत अवतरित हुई । (सहीह बुख़ारी, तफ़्सीर सूर: ज़ुमर) इसका अभिप्राय यह नहीं कि दया तथा क्षमा की आशा में ख़ूब पाप किये जाओ, उसके आदेशों तथा अनिवार्य आज्ञाओं की परवाह न करो तथा उसके नियमों तथा सीमाओं का निश्चिन्त होकर उल्लंघन करो । इस प्रकार उसके क्रोध तथा प्रतिशोध को दावत देकर उसकी दया एवं क्षमा की आशा रखना अति मूर्खता एवं कुविचार है । यह काँटा बोकर फल खाने की आशा रखने के सदृश है । ऐसे लोगों को यह याद रखना चाहिए कि वह जहाँ अपने बंदो के लिए क्षमाशील दयालु है वहाँ अवज्ञाकारियों के लिए عزيز ذوانتقام भी है । जैसाकि पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थानों पर इन दोनों बातों को साथ-साथ

وَأَنِيبُوٓا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُۥ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा तुम सब अपने प्रभु की ओर झुक पड़ो तथा उसका आज्ञापालन किये जाओ इससे पूर्व कि तुम्हारे पास प्रकोप आ जाये तथा फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।

وَٱتَّبِعُوٓا أَحْسَنَ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) तथा अनुसरण करो उस सर्वोत्तम वस्तु का जो तुम्हारी ओर तुम्हारे प्रभु की ओर से अवतरित की गयी है, इससे पूर्व कि तुम पर सहसा प्रकोप आ जाये तथा तुम्हें सूचना भी न हो।[1]

أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَٰحَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُ فِى جَنۢبِ ٱللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ ٱلسَّٰخِرِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि हाय अफ़सोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह (तआला) के पक्ष में आलस्य किया[2] बल्कि मैं उपहास उड़ाने वालों में ही रहा।

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ ٱللَّهَ هَدَىٰنِى لَكُنتُ مِنَ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे मार्गदर्शन प्रदान करता तो मैं भी संयमी लोगों में होता।[3]

वर्णन किया गया है, जैसे ﴿نَبِّئْ عِبَادِىٓ أَنِّىٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِى هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ﴾ (अल-हिज्र-४९,५०) शायद यही कारण है कि यहाँ आयत का आरम्भ يَا عِبَادِيَ (हे मेरे बंदो) से फ़रमाया, जिससे यही विदित होता है कि जो ईमान लाकर अथवा सच्ची तौबा करके सही अर्थों में अल्लाह का बंदा बन जायेगा, उसके पाप यदि समुद्र की झाग (फेन) के बराबर भी हो तो वह क्षमा कर देगा। वह अपने बन्दों के लिए निश्चय غفور رحيم (क्षमाशील तथा दयालु) है। जैसे हदीस में सौ व्यक्तियों के हत्यारे की क्षमा की घटना है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, मुस्लिम किताबुत्तौबा)

[1]अर्थात प्रकोप आने से पूर्व क्षमा-याचना तथा पुण्य कर्म की व्यवस्था कर लो क्योंकि जब प्रकोप आयेगा तो उसका ज्ञान तथा बोध भी तुम्हें नहीं होगा। इससे अभिप्राय सांसारिक प्रकोप है।

[2] فِي جَنْبِ الله का भावार्थ अल्लाह का आज्ञापालन अर्थात पवित्र क़ुरआन तथा उसके अनुसार कर्म करने में आलस्य है। अथवा جَنْب का अर्थ निकट तथा पड़ोस है। अर्थात अल्लाह की समीपता एवं पड़ोस (अर्थात स्वर्ग) ढूंढने तथा चाहने में आलस्य किया।

[3]अर्थात यदि अल्लाह मुझे मार्गदर्शन दे देता तो मैं अवज्ञा, शिर्क तथा पापों से बच जाता।

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) अथवा यातनाओं को देखकर कहे, काश ! किसी प्रकार मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी सदाचारियों में हो जाता।

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٩﴾

(५९) हाँ (हाँ) नि:संदेह तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया तथा अहंकार (एवं गर्व) किया तथा तू था ही काफ़िरों में।[1]

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जिन लोगों ने अल्लाह पर मिथ्या-रोपण किया है तो आप देखेंगे कि क़यामत के दिन उनके मुख काले हो गये होंगे।[2] क्या अंहकार करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं ?[3]

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦١﴾

(६१) तथा जिन लोगों ने संयम किया उन्हे अल्लाह (तआला) उनकी सफ़लता के साथ बचा लेगा,[4] उन्हें कोई दुख स्पर्श भी न कर

यह उसी प्रकार है जैसे दूसरे स्थान पर मुशरीकीन (मिश्रणवादियों) का कथन नक़ल (उदघृत) किया गया है ﴿لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا﴾ "यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते" (*अल-अनआम*-१४८) इनका यह कथन كلمة حق أريد بها الباطل के समान है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]ये अल्लाह तआला उन की इच्छा के उत्तर में फ़रमायेगा

[2]जिसका कारण यातना की भयानकता एवं अल्लाह के क्रोध का दर्शन होगा।

[3]हदीस में है «الْكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وغَمْطُ النَّاسِ» "सत्य का इंकार तथा लोगों को हीन समझना अहंकार है।" यह प्रश्न सकारात्मक है अर्थात अल्लाह के आज्ञापालन से अभिमान करने वालों का स्थान नरक है।

[4] مَفَازَة धातु है मीम के साथ अर्थात فوز (सफलता) बुराई से बच जाना तथा भलाई एवं सौभाग्य प्राप्त कर लेना। अभिप्राय यह है कि अल्लाह सदाचारियों को उस सफलता तथा सौभाग्य के कारण मुक्ति प्रदान करेगा जो अल्लाह के पास उनके लिए पहले ही से लिखित है।

सकेगा तथा वे न किसी प्रकार दुखी होंगे ।[1]

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾

(६२) अल्लाह समस्त वस्तुओं का जन्मदाता है, तथा वही प्रत्येक वस्तु का संरक्षक है ।[2]

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आकाशों तथा धरती की चाभियों का स्वामी वही है ।[3] जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया है वही हानि उठाने वाले हैं ।[4]

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْۗنِّىْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) (आप) कह दीजिए कि हे मूर्खो ! क्या तुम मुझसे अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की इबादत के लिए कहते हो ।[5]

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ

(६५) तथा निःसंदेह तेरी ओर भी तथा तुझसे पूर्व (के समस्त नबियों) की ओर भी प्रकाशना

---

[1]वह दुनिया में जो कुछ छोड़कर आये हैं उस पर उन्हें कोई शोक न होगा । वह चूँकि क़यामत की भयानकता से सुरक्षित रहेंगे इसलिए उन्हें किसी बात का दुख न होगा ।

[2]अर्थात प्रत्येक वस्तु का विधाता वही है तथा स्वामी भी वही है । वह जैसे चाहे शासन तथा व्यवस्था करे । प्रत्येक चीज़ उसके अधीन एवं अधिकार में है । किसी को मुख फेरने का साहस नहीं ।

وكيل (वकील) अर्थात संरक्षक एवं व्यवस्थापक । प्रत्येक चीज़ उसके सुपुर्द है । वह बिना किसी साझी के उनकी रक्षा तथा व्यवस्था कर रहा है ।

[3] مَقَالِيد यह مِقْلِيد तथा مِقْلَادٌ (मिक़लाद) का बहुवचन है । (फ़तहुल क़दीर) जिसका अर्थ चाभियाँ हैं । कुछ ने 'कोष' किया है, भावार्थ दोनों प्रकार एक ही है कि सभी विषय की बागडोर उसी के हाथ में है ।

[4]अर्थात पूरा घाटा, क्योंकि इस कुफ़्र के दुष्परिणाम में वह नरक में चले गये ।

[5]यह काफ़िरों की उस दावत (आमन्त्रण) के उत्तर में है जो वे इस्लाम के उपदेशक महा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया करते थे कि अपने पूर्वजों का धर्म ग्रहण कर लें, जिसमें मूर्तियों की पूजा थी ।

مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾

की गयी है कि यदि तूने शिर्क किया तो नि:संदेह तेरा कर्म नष्ट हो जायेगा तथा निश्चित रूप से तू हानि उठाने वालों में से हो जायेगा ।[1]

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

(६६) बल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर[2] तथा कृतज्ञता व्यक्त करने वालों में से हो जा ।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ

(६७) तथा उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया,[3] सारी धरती क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी तथा समस्त आकाश उसके दायें हाथ में

---

[1]"यदि तनू शिर्क किया" का अभिप्राय यह है कि यदि मौत शिर्क पर आई तथा उससे तौबा (क्षमा-याचना) न की । संबोधन यद्यपि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है जो शिर्क से पाक (पवित्र) भी थे तथा भविष्य के लिए सुरक्षित भी । क्योंकि पैग़म्बर अल्लाह की सुरक्षा एवं संरक्षण में होता है । उनसे शिर्क होने की कोई संभावना न थी किन्तु यह वास्तव में अनुयाईयों की ओर संकेत तथा उनको समझाना उद्देश्य था ।

[2]यहाँ भी إِيَّاكَ نَعْبُدُ की भाँति कर्म कारक اللَّهَ (अल्लाह) को पहले लाकर सीमित करने का अर्थ लिया गया है कि मात्र एक अल्लाह की उपासना करो ।

[3]क्योंकि उसकी बात भी नहीं मानी जो पैग़म्बरों द्वारा उन तक पहुँचाई थी तथा इबादत (आराधना) भी उसके लिए विशेष नहीं की बल्कि दूसरों को भी उसमें सम्मिलित (साझी) कर लिया । हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तथा कहा कि हम अल्लाह के विषय में (किताबों) में पाते हैं कि वह क़यामत (प्रलय) के दिन आकाशों को एक ऊँगली पर, भूमि को एक ऊँगली पर, पेड़ों को एक ऊँगली पर, जल तथा आर्दता को एक ऊँगली पर, तथा सभी उत्पत्ति को एक ऊँगली पर रख लेगा तथा फ़रमायेगा, मैं राजा हूँ । आप ने मुस्कुरा कर उसकी पुष्टि की तथा आयत وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ का पाठ किया (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूर: ज़ूमर*) । वर्तमान एवं पूर्वज मुस्लिम ज्ञानियों की आस्था है कि जिन सदगुणों का वर्णन पवित्र क़ुरआन तथा सही हदीसों में है (जैसे इस आयत में हाथ का तथा हदीस में अंगुलियों का प्रमाण है) उन पर बिना उपमा तथा बिना कष्ट कल्पना एवं बिना परिवर्तन के ईमान रखना अनिवार्य है । अत: यहाँ वर्णित तथ्यों को मात्र प्रभुत्व तथा शक्ति के भाव में लेना सही नहीं है ।

سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٦٧

लपेटे हुए होंगे। वह पवित्र एवं सर्वोपरि है प्रत्येक उस वस्तु से जिसे लोग उसका साझीदार बनायें।[1]

وَنُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا مَن شَآءَ ٱللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ ۝٦٨

(६८) तथा सूर (नरसिंघा) फूँक दिया जायेगा तो आकाशों तथा धरती वाले सभी अचेत होकर गिर पड़ेंगे[2] परन्तु जिसे अल्लाह चाहे,[3] फिर पुनः सूर फूँका जायेगा तो वे सहसा खड़े होकर देखने लग जायेंगे।[4]

وَأَشْرَقَتِ ٱلْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

(६९) तथा धरती अपने प्रभु की दिव्य ज्योति से जगमगा उठेगी,[5] कर्मपत्र प्रस्तुत किये

---

[1]इस संदर्भ में भी हदीस में आता है कि फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा أنا الملِكُ ، أين مُلوك الأرض "मैं राजा हूँ, धरती के राजे आज कहाँ हैं।" (उपरोक्त हवाला)

[2]कुछ के निकट نفخة فزع (घबराहट की फूँक) के बाद यह दूसरी फूँक अर्थात نفخة صعق (बेहोशी की फूँक) होगी जिस के बाद सभी मर जायेंगे। कुछ के यहाँ यह पहली ही फूँक है। इसी से पहले तो अति घबराहट हो जायेगी तथा फिर सब मर जायेंगे। कुछ ने इन नफ़खों (फूँकों) का अनुक्रम इस प्रकार वर्णित किया है। प्रथम नफ़खतुल फ़ना (विलय की फूंक), दूसरा नफ़खतुल बअस (जीवित होने की फूंक), तीसरा नफ़खतुस्सअक (बेहोशी की फूंक) तथा चौथा नफ़खतुल क़यामे ले रब्बिल आलमीन (अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए खड़े होने की फूंक)। (ऐसरूत्तफ़ासीर) कुछ के निकट मात्र दो ही नफ़खे (फूँकें) हैं। नफ़खुतल मौत तथा नफ़खुतल बअस तथा कुछ के निकट तीन। والله أعلم

[3]अर्थात जिनको अल्लाह चाहेगा उन्हें मौत नहीं आयेगी, जैसे जिब्रील, मीकाईल तथा इस्राफ़ील फ़रिश्ते। कुछ कहते हैं कि रिज़वान फ़रिश्ता अर्थात अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते तथा स्वर्ग एवं नरक पर नियुक्त अधिकारी।

[4]चार नफ़खों (फूंकों) के मानने वालों के निकट यह चौथा, तीन मानने वालों के निकट तीसरा तथा दो मानने वालों के समीप यह दूसरा नफ़खा है। जो भी हो, इस फूंक से सब जीवित होकर मैदाने महशर में सर्वलोक के पालनहार के सदन में उपस्थित हो जायेंगे जहाँ हिसाब-किताब होगा।

[5]इस नूर (प्रकाश) से कुछ ने न्याय तथा कुछ ने आदेश अभिप्राय लिया है। परन्तु इसे वास्तविक अर्थ में लेने में कोई वस्तु रूकावट नहीं है, क्योंकि अल्लाह आकाशों तथा धरती का प्रकाश है। (फ़तहुल क़दीर)

الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٩

जायेंगे, नबियों तथा साक्षियों को लाया जायेगा[1] तथा लोगों के मध्य न्यायपूर्ण निर्णय कर दिये जायेंगे और उन पर अत्याचार न किया जायेगा।[2]

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٧٠

(७०) तथा जिस व्यक्ति ने जो कुछ किया है पूर्ण रूप से दे दिया जायेगा, और जो कुछ भी लोग कर रहे हैं, वह भली-भाँति जानने वाला है।[3]

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ

(७१) तथा काफ़िरों के झुंड के झुंड नरक की ओर हाँके जायेंगे,[4] जब वे उसके निकट पहुँच जायेंगे उसके द्वार उनके लिए खोल दिये जायेंगे[5] तथा वहाँ के रक्षक उनसे पूछेंगे

---

[1]नबियों से प्रश्न किया जायेगा कि तुमने मेरा उपदेश पहुँचाया था, अथवा यह पूछा जायेगा कि तुम्हारे समुदायों ने तुम्हारे आमंत्रण का क्या उत्तर दिया, उसे स्वीकार किया या अस्वीकार? मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (सम्प्रदाय) को साक्षी के रूप में लाया जायेगा, जो इस बात की गवाही देंगे कि तेरे पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) ने तेरा संदेश अपनी अपनी जातियों अथवा समुदाय को पहुँचा दिया था, जैसाकि तूने पवित्र क़ुरआन द्वारा इन बातों पर सूचित किया था।

[2]अर्थात किसी के प्रतिफल तथा पुण्य में कमी नहीं होगी तथा न किसी को उसके अपराध से अधिक दण्ड दिया जायेगा।

[3]अर्थात उसको किसी लेखक, मुन्शी तथा गवाह की आवश्यकता नहीं। यह कर्म-पत्र एवं गवाह मात्र तर्क के लिये तथा बहाने को दूर करने के लिए होंगे।

[4](ज़ुमर) زُمَرْ यह زَمْرٌ (जम्र) से बना है जिसका अर्थ स्वर है। प्रत्येक गिरोह अथवा समूह में शोर तथा आवाज़ें अवश्य होती हैं। इसलिए यह गिरोह तथा समूह के लिए भी प्रयुक्त होता है। अभिप्राय यह है कि काफ़िरों को नरक की ओर समूहों में ले जाया जायेगा, एक के पीछे एक गिरोह। इसके अतिरिक्त, इन्हें मार-पीटकर जानवरों के रेवड़ के समान हंकाया जायेगा। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا﴾ (अत्तूर-१३) अर्थात "उन्हें नरक की ओर कठोरता से ढकेला जायेगा।"

[5]अर्थात उनके पहुँचते ही तुरन्त नरक के सातों द्वार खोल दिये जायेंगे ताकि यातना में विलम्ब न हो।

مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आये थे ? जो तुम पर तुम्हारे प्रभु की आयतें पढ़ते थे तथा तुम्हें इस दिन की भेंट से सावधान करते थे, ये उत्तर देंगे कि हाँ, क्यों नहीं ![1] परन्तु यातना का आदेश काफ़िरों पर सिद्ध हो गया ।[2]

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾

(७२) कहा जायेगा कि अब नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ जहाँ वे सदैव रहेंगे, बस अवज्ञाकारियों का ठिकाना अत्यन्त बुरा है ।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ

(७३) तथा जो लोग अपने प्रभु से डरते थे उनके गुट के गुट स्वर्ग की ओर भेज दिये जायेंगे,[3] यहाँ तक कि जब उसके निकट आ जायेंगे तथा द्वार खोल दिये जायेंगे[4] तथा वहाँ

---

[1]अर्थात जिस प्रकार दुनिया में वाद-विवाद तथा तर्क-वितर्क करते थे वहाँ सब कुछ आँखों के आगे आ जायेगा । वाद-विवाद का अवसर ही नहीं रह जायेगा । अतएव स्वीकार किये बिना कोई चारा नहीं होगा ।

[2]अर्थात हमने पैग़म्बरों को झुठलाया तथा उनका विरोध किया उस दुर्भाग्य के कारण जिसके हम पात्र थे, जब कि हमने सत्य से पलायन करके असत्य को अपनाया । इस विषय को सूर: *अल-मुल्क* ८ से १० तक में अधिक स्पष्टता से वर्णन किया गया है ।

[3]ईमानवाले तथा संयमी भी गिरोहों के रूप में स्वर्ग की ओर ले जाये जायेंगे । पहले मुक़र्रबीन (समीपस्थ) फिर अबरार (सदाचारी), इसी प्रकार क्रमानुसार प्रत्येक गिरोह समान श्रेणी के लोगों पर सम्मिलित होगा, जैसे अम्बिया अम्बिया के साथ, सिद्दीक़ीन (सत्यवादी) तथा शहीद अपने जैसों के साथ तथा विद्वान अपने जैसे विद्वानों के साथ, अर्थात प्रत्येक प्रकार अपने ही प्रकार अथवा समान के संग होगा । (इब्ने कसीर)

[4]हदीस में आता है कि स्वर्ग के आठ द्वार हैं । उनमें एक का नाम 'रय्यान' है जिससे केवल व्रत रखने वाले (रोज़ेदार) प्रवेश करेंगे (सहीह बुख़ारी न॰ २२५७, मुस्लिम न॰ ८०८) । इसी प्रकार अन्य द्वारों के भी नाम होंगे, जैसे नमाज़ का द्वार, दान का द्वार, जिहाद (धर्मयुद्ध) का द्वार आदि (सहीह बुख़ारी, किताबुस सेयाम, मुस्लिम-किताबुज़ ज़कात) । द्वार की चौड़ाई चालीस वर्ष की दूरी के बराबर होगी, फिर भी वे भरे हुए होंगे । (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़ोहद) सबसे पहले स्वर्ग का दरवाज़ा खटखटाने वाले नबी सल्लल्लाहु

عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

के रक्षक उनसे कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम प्रसन्न रहो ! बस तुम इनमें सदैव के लिए चले जाओ ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) यह कहेंगे कि अल्लाह का धन्य है जिसने अपना वचन पूरा किया तथा हमें इस धरती का उत्तराधिकारी बना दिया कि स्वर्ग में जहाँ चाहें निवास करें, तो सत्कर्म करने वालों का क्या ही उत्तम बदला है !

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा तू फ़रिश्तों को अल्लाह के अर्श के चारों ओर चक्र बनाये हुए अपने प्रभु की प्रशंसा तथा तस्बीह करते हुए देखेगा,[1] तथा उनमें न्यायपूर्ण निर्णय किया जायेगा तथा कह दिया जायेगा कि समस्त प्रशंसायें अल्लाह ही के

अलैहि वसल्लम होंगे । (मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु अना अव्वलुन नासे यशफ़ऊ) स्वर्ग में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाले गिरोह के मुखड़े पूर्णिमा के चाँद के समान तथा दूसरे गिरोह के आकाश में प्रकाशमान तारों में से अति प्रकाशमान तारों के समान चमकते होंगे । स्वर्ग में वह मल-मूत्र तथा थूक एवं कफ़ से पवित्र होंगे । उनकी कंघियाँ सोने की तथा पसीना कस्तूरी होगा । उनकी अंगेठियों में सुगंधित लकड़ी होगी । उनकी पत्नियाँ हूरे ईन (बड़ी आँखों वाली) होंगी । उनका आकार आदम के समान साठ हाथ का होगा । (सहीह बुख़ारी अव्वलो किताबिल अंबिया) सहीह बुख़ारी के एक वर्णन में है कि प्रत्येक ईमानवाले को दो पत्नियाँ मिलेंगी । उनकी शोभा एवं सौन्दर्य की यह स्थिति होगी कि उनकी पिंडली का गूदा माँस के पीछे से दिखाई पड़ेगा । (किताबु बदइल ख़ल्क बाबु मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नते) कुछ ने कहा है कि यह दो पत्नियाँ हूरों के अतिरिक्त दुनिया की नारियों में से होंगी । परन्तु ७२ हूरों वाला वर्णन प्रमाणानुसार सही नहीं, इसलिए प्रत्यक्षत: यही बात सही लगती है कि प्रत्येक स्वर्गवासी की हूरों समेत कम से कम दो पत्नियाँ होंगी । फिर भी وَلَهُم فِيهَا مَا يَشْتَـهُون के अंतर्गत अधिक भी संभव हैं । والله أعلم (अधिक जानकारी के लिए देखिए फ़तहुल बारी उक्त अध्याय)

[1]अल्लाह के निर्णय के पश्चात जब ईमानवाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मुशरिक नरक में चले जायेंगे । आयत में उसके बाद का चित्रण किया गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह के अर्श (आसन) को घेरे हुए अल्लाह की प्रशंसा एवं पवित्रतागान में लीन होंगे ।

लिए हैं जो सर्वलोक का पालनहार है ।[1]

सूरतुल मोमिन-४०

سُورَةُ المُؤْمِن

सूर: मोमिन* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पच्चासी आयतें एवं नौ रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

حٰمٓ ﴿١﴾

(१) हा॰ मीम॰ ।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾

(२) इस किताब का अवतरित करना[2] उस अल्लाह की ओर से है जो प्रभावशाली एवं सर्वज्ञाता है ।[3]

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ

(३) पापों को क्षमा करने वाला तथा क्षमा-याचना को स्वीकार करने वाला[4] घोर यातना वाला [5]

---

[1]यहां प्रशंसा को किसी एक वस्तु से सम्वंधित नहीं किया गया है जिससे विदित होता है कि प्रत्येक वस्तु (जो बोलती हो या बोलती न हो) के मुख पर अल्लाह की महिमा के गान होंगे ।

*इस सूरह को सूरतुल ग़ाफ़िर तथा सूरतुत्तौल भी कहते हैं ।

[2]या تنزيل अर्थ में है مُنَزَّل के, अर्थात अल्लाह की ओर से अवतरित है जिसमें झूठ नहीं ।

[3]जो प्रभुत्वशाली है । उसकी शक्ति तथा प्रभुत्व के आगे कोई पंख नहीं मार सकता । عليم (ज्ञानी) है, उससे कोई कण तक गुप्त नहीं चाहे वह कितने ही स्थूल पर्दे में छिपा हो ।

[4]पूर्व के पापों को क्षमा करने वाला तथा आगामी होने वाले आलस्य पर तोवा (क्षमा-याचना) स्वीकार करने वाला है । अथवा अपने मित्रों के पाप क्षमा करने वाला तथा काफ़िर एवं मुशरिक यदि क्षमा मांगें तो उनकी क्षमा स्वीकार करने वाला है ।

[5]उनके लिये जो आख़िरत पर दुनिया को महत्व दें तथा दुष्टता एवं उद्दण्डता का मार्ग अपनायें । यह अल्लाह के इस कथन की भाँति ही है ।

﴿ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۞ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴾

شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

उपकार एवं सामर्थ्य वाला,[1] जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं । उसी की ओर वापस लौटना है ।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ④

(४) अल्लाह (तआला) की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं [2] तो उन लोगों का नगरों में चलना-फिरना आपको धोखे में न डाल दे ।[3]

"मेरे बन्दों को बता दो कि मैं क्षमाशील दयानिधि हूँ तथा मेरा दण्ड भी अति दुखदायी है ।" (*अल-हिज्र-४९,५०*)

पवित्र क़ुरआन में अधिकाँश स्थान पर यह दोनों गुण साथ-साथ वर्णित किये गये हैं ताकि इंसान भय तथा आशा के बीच रहे, क्योंकि मात्र भय इंसान को अल्लाह की दया एवं क्षमा से निराश कर सकता है तथा केवल आशा पापों पर उत्साहित कर देती है ।

[1] طَـوْلٌ का अर्थ वैभव तथा विस्तार है अर्थात वही वैभव एवं धन प्रदान करने वाला है । कुछ कहते हैं कि इसका अर्थ पुरस्कार तथा उपकार है, अर्थात अपने बंदों पर उपकार तथा उन्हें पुरस्कृत करने वाला है ।

[2]इस झगड़े से अभिप्राय अनुचित तथा व्यर्थ का झगड़ा है जिसका उद्देश्य सत्य को झुठलाना तथा उसका खंडन है । अन्यथा जिस तर्क-वितर्क (बहस) का उद्देश्य सत्य का स्पष्टीकरण असत्य का खंडन तथा विरोधियों एवं आलोचना करने वालों की शंकाओ का निवारण हो, वह निन्दनीय नहीं अति प्रशंसनीय तथा उत्तम है । विद्वानों को तो इसके लिए बल दिया गया है,

﴿ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهُ ﴾

"तुम लोगों के सामने इसका अवश्य वर्णन करो तथा इसे छिपाना नहीं ।" (*आले-इमरान-१८७*)

अल्लाह की अवतरित की हुई किताब के तर्कों एवं प्रमाणों को छिपाना इतना घोर अपराध है कि उस पर विश्व की प्रत्येक वस्तु धिक्कार करती है । (*अल-बक़रः-१५९*)

[3]अर्थात यह काफ़िर एवं मुशरिक जो व्यवपार करते हैं तथा उसके लिए विभिन्न नगरों में आते जाते एवं भारी लाभ प्राप्त करते हैं, यह अपने कुफ़्र (अविश्वास) के कारण शीघ्र ही अल्लाह की पकड़ में आ जायेंगे । यह अवसर अवश्य दिये जा रहे हैं किन्तु उन्हें

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ ۖ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾

(५) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने तथा उनके पश्चात के दूसरे समुदायों ने भी झुठलाया था, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बन्दी बनाने का विचार किया [1] तथा असत्य के माध्यम से हठधर्मी की ताकि उनसे सत्य को नाश कर दें[2] बस मैंने उनको पकड़ लिया, तो मेरी ओर से कैसा दण्ड हुआ ।[3]

وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٦﴾

(६) तथा इसी प्रकार आपके प्रभु का आदेश काफ़िरों पर सिद्ध हो गया कि वे नरकवासी हैं ।[4]

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا

(७) अर्श के उठाने वाले तथा उसके आस-पास के फ़रिश्ते अपने प्रभु की महिमागान प्रशंसा के साथ-साथ करते हैं तथा उस पर ईमान रखते हैं तथा ईमानवालों के लिए क्षमा-याचना करते हैं; (कहते हैं) कि हे हमारे प्रभु तूने प्रत्येक वस्तु को अपनी दया तथा ज्ञान से

बेकार नहीं छोड़ा जायेगा ।

[1]ताकि उसे बंदी वा हत कर दें अथवा दण्ड दें ।

[2]अर्थात अपने रसूलों से उन्होंने झगड़ा किया जिसका आशय सत्य में त्रुटि निकालना तथा उसे निर्बल करना था ।

[3]तो मैंने इन अनृत के पक्षपातियों को अपने प्रकोप की पकड़ में ले लिया । फिर तुम देख लो कि उसके लिए मेरा प्रकोप किस प्रकार आया, कैसे उन्हें गलत अक्षर की भाँति मिटा दिया गया अथवा उन्हें शिक्षा का प्रतीक बना दिया गया ।

[4]इससे उद्देश्य इस बात का स्पष्टीकरण करना है कि जैसे विगत समुदायों पर तेरे प्रभु का प्रकोप सिद्ध हुआ तथा नाश कर दिये गये, यदि यह मक्का के नागरिक भी तुझे झुठलाने तथा विरोध करने से न रूके तथा असत्य विवाद को न छोड़ा तो यह भी इसी प्रकार अल्लाह के प्रकोप में पकड़ लिये जायेंगे, फिर कोई उन्हें बचाने वाला न होगा ।

فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝٧

घेर रखा है, तो तू उन्हें क्षमा कर दे जो क्षमा माँगें तथा तेरे मार्ग का अनुसरण करें तथा तू उन्हें नरक की यातना से भी सुरक्षित रख।[1]

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٨

(८) हे हमारे प्रभु! तू उन्हें नित्य रहने वाले स्वर्ग में ले जा, जिनका तूने उनको वचन दिया है, तथा उनके पूर्वजों तथा पत्नियों एवं सन्तानों में से (भी) उन सबको जो सदाचारी हैं।[2] वस्तुतः तू प्रभावशाली एवं तत्वज्ञ है।

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ

(९) तथा उन्हें कुकर्मों से भी सुरक्षित रख,[3] (सत्य तो यह है कि) उस दिन तूने जिसे

---

[1]इसमें निकटता प्राप्त फ़रिश्तों के एक विशेष गिरोह की चर्चा है तथा वे जो कुछ करते हैं, उसका स्पष्टीकरण है। यह वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श उठाने वाले हैं। तथा वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श के चारों ओर हैं। उनका एक काम यह है कि वह अल्लाह की तस्बीह तथा पवित्रतागान करते हैं, अर्थात दोषों से उसकी स्वच्छता तथा उसके लिये गुणों एवं निपुणता की सिद्धि तथा उसके आगे विवशता तथा विनम्रता (ईमान) का प्रदर्शन करते हैं। दूसरा काम उनका यह है कि ईमानवालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं। कहा जाता है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते चार हैं किन्तु प्रलय के दिन उनकी संख्या आठ होगी। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात इन सबको स्वर्ग में एकत्रित कर दे ताकि एक-दूसरे को देखकर वे प्रसन्न हों। इस विषय को दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ﴾

"वह लोग जो ईमान लाये तथा उन्हीं का अनुगमन उनकी संतान ने ईमान के साथ किया। हमने उनके साथ उनकी संतान को मिला दिया तथा हमने उनके कर्मों में से कुछ कम नहीं किया।" (सूरः अत्तूर-२१)

अर्थात सबको स्वर्ग में इस प्रकार समान श्रेणी दे दिया कि नीच को भी ऊँचे का पद प्रदान कर दिया। यह नहीं किया कि उच्च पद में कमी करके उन्हें नीचे स्थान पर ले आये अपितु नीचे को उठाकर ऊँचा कर दिया तथा उसके कर्म की कमी को अपनी कृपा तथा दया से पूरा कर दिया।

[3]यहाँ سيئات से अभिप्राय यातनायें हैं, अथवा फिर उत्तर लुप्त है, अर्थात उन्हें आख़िरत (परलोक) की यातनाओं से अथवा बुराईयों के प्रतिकार से बचाना।

يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩

कुकर्मों (अशुभ) से बचा लिया उस पर तूने दया कर दी, तथा सबसे बड़ी सफलता तो यही है ।[1]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝١٠

(१०) नि:संदेह जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें यह आवाज़ दी जायेगी कि निश्चय अल्लाह का तुम पर क्रोधित होना उससे बहुत अधिक है, जो तुम क्रोधित होते थे अपने मन से जब तुम ईमान की ओर बुलाये जाते थे, फिर कुफ़्र करने लगते थे ।[2]

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ

(११) (वे) कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमें दोबारा मारा तथा दोबारा ही जीवित किया[3] अब हम अपने पापों को स्वीकार

---

[1]अर्थात आख़िरत (प्रलय) की यातना से बच जाना तथा स्वर्ग में प्रवेश पा जाना यही सबसे बड़ी सफलता है । क्योंकि इस जैसी सफलता कोई नहीं तथा इसके समतुल्य कोई मोक्ष नहीं । इन आयतों में ईमानवालों के लिए दो शुभ सूचनायें हैं, एक तो यह कि फ़रिश्ते उनके लिए परोक्ष रूप से प्रार्थना करते हैं जिसकी हदीस में प्रधानता आयी है । दूसरी यह कि ईमान वालों के परिवार स्वर्ग में एकत्रित हो जायेंगे । "अल्लाह हमें उनमें कर दे जिनको उनके पुनीत पूर्वजों के साथ मिलायेगा ।"

[2]مَقْت (मक़्त) घोर क्रोध को कहते हैं । नरकवासी स्वयं को नरक में झुलसते देखकर अति क्रोधित होंगे । उस समय उनसे कहा जायेगा कि संसार में जब तुम्हें ईमान का आमन्त्रण दिया जाता था तथा तुम इंकार करते थे तो अल्लाह तआला इससे कहीं अधिक तुम पर क्रोधित होता था जितने आज तुम स्वयं अपने ऊपर क्रोधित हो रहे हो । यह अल्लाह के उस क्रोध का ही परिणाम है कि आज तुम नरक में हो ।

[3]बहुसंख्यक भाष्यकारों की व्याख्या के अनुसार दो मौतों में से प्रथम मौत तो वह वीर्य है जो पिता की पीठ में होता है अर्थात उसके स्तित्व से पूर्व उसके नास्तित्व को मौत कहा है, तथा दूसरी मौत वह है जब इन्सान जीवन बिताकर प्राप्त करता है जिसके बाद समाधि में गाड़ दिया जाता है । दो जीवनों में से प्रथम यह सांसारिक जीवन है जिसका आरम्भ जन्म से तथा अन्त निधन पर होता है । तथा दूसरा जीवन वह है जो प्रलय के दिन क़ब्रों से उठने के पश्चात प्राप्त होगा । इन्हीं दो मौतों तथा दो जीवनों की चर्चा ﴿وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ﴾ (अल-बक़र:-२८) में की गई है ।

إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿١١﴾

करते हैं [1] तो क्या अब कोई मार्ग निकलने का भी है ?[2]

ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾

(१२) यह (यातना) तुम्हें इसलिए है कि जब केवल अकेले अल्लाह की ओर बुलाया जाता तो तुम अस्वीकार कर देते थे; तथा यदि उसके साथ किसी को सम्मिलित कर लिया जाता था तो तुम स्वीकार कर लेते थे।[3] तो अब निर्णय अल्लाह सर्वोपरि एवं महान का ही है।[4]

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾

(१३) वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ (चिन्ह) दिखाता है तथा तुम्हारे लिए आकाश से जीविका उतारता है।[5] शिक्षा तो वही ग्रहण करते हैं जो (अल्लाह की ओर) झुकते हैं।[6]

---

[1]अर्थात नरक में स्वीकार करेंगे, जहाँ स्वीकार का कोई लाभ न होगा तथा वहाँ लज्जित होंगे जहाँ पश्चाताप का कोई मूल्य न होगा।

[2]यह वही इच्छा है जिसकी चर्चा पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थान पर की गई है कि हमें फिर संसार में भेज दिया जाये ताकि हम पुण्य के कर्म करके आयें।

[3]यह उनके नरक से न निकाले जाने का कारण बताया है कि तुम संसार में अल्लाह की तौहीद (एकता) का इंकार करते थे तथा शिर्क तुम्हें रूचिकर था। अत: अब नरक की स्थायी यातना के सिवाय तुम्हारे लिये कुछ नहीं।

[4]उसी एक अल्लाह का आदेश है कि अब तुम्हारे लिये नरक की यातना सदा के लिए है तथा उससे निकलने के लिये कोई मार्ग नहीं।

[5]अथार्त पानी जो तुम्हारी जीविका का माध्यम है। यहाँ अल्लाह तआला ने निशानियों के प्रकट करने को जीविका उतारने के साथ मिला दिया है। इसलिए कि सामर्थ्य के चिन्हों का दिखाना धर्मों का मूल है तथा अजीविकायें शरीरों की मूल हैं। इस प्रकार यहाँ दोनों आधारों को एकत्र कर दिया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[6]अल्लाह के आज्ञापालन की ओर जिससे उनके दिलों में आख़िरत (परलोक) का भय जागृत होता है तथा अल्लाह के आदेशों तथा अनिवार्य कर्तव्यों का पालन करते हैं।

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ⑭

(१४) तुम अल्लाह को पुकारते रहो उसके लिए धर्म को विशुद्ध करके यद्यपि काफ़िर बुरा मानें ।[1]

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ⑮

(१५) उच्च पदों वाला अर्श का स्वामी; वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है प्रकाशना अवतरित करता है[2] ताकि वह भेंट के दिन से डराये ।

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ⑯

(१६) जिस दिन (सब) लोग प्रकट हो जायेंगे,[3] उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य है ?[4] मात्र अल्लाह एक एवं प्रभुत्वशाली का ।[5]

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

(१७) आज प्रत्येक प्राण को उसकी करनी का फल दिया जायेगा, आज (किसी प्रकार का)

---

[1]अर्थात जब सब कुछ अल्लाह अकेला ही करने वाला है तो काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे केवल उसी एक अल्लाह को पुकारो उसके लिए इबादत तथा आज्ञापालन को विशुद्ध करते हुए।

[2] روح (आत्मा) से अभिप्राय प्रकाशना (वह्यी) है जो बन्दों ही में से किसी को रिसालत (ईशदूतत्व) के लिए चयन कर अवतरित करता है। प्रकाशना (वह्यी) को रूह (आत्मा) इसलिए कहा गया है कि जिस प्रकार रूह में मानव जीवन के स्तित्व एवं सुरक्षा का भेद छिपा है, उसी प्रकार वह्यी से भी उन इन्सानी दिलों में जीवन की लहर दौड़ जाती है जो पहले कुफ़्र तथा शिर्क के कारण मृत होते हैं।

[3]अर्थात जीवित होकर क़ब्रों से बाहर निकल खड़े होंगे।

[4]यह क़यामत के दिन अल्लाह तआला (परमेश्वर) पूछेगा जब सभी इन्सान उसके आगे महशर के मैदान (एकत्र होने के स्थान) में खड़े होंगे। अल्लाह तआला धरती को अपनी मुट्ठी तथा आकाश को अपने दायें हाथ में लपेट लेगा तथा कहेगा, "राजा मैं हूँ, धरती के राजा कहाँ हैं ?" (सहीह बुख़ारी, *सूर: ज़ुमर*)

[5]जब कोई नहीं बोलेगा तो यह उत्तर अल्लाह तआला स्वयं ही देगा। कुछ कहते हैं कि अल्लाह के आदेशानुसार एक फ़रिश्ता एलान करेगा जिसके साथ ही सभी काफ़िर तथा मुसलमान एक स्वर में यही उत्तर देंगे। (फ़तहुल क़दीर)

لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

अत्याचार नहीं, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र हिसाब करने वाला है।[1]

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾

(१८) तथा उन्हें अति निकट आने वाली[2] (क़यामत) से सावधान कर दें जबकि दिल गले तक पहुँच जायेंगे तथा सब शान्त (चुप) होंगे।[3] अत्याचारियों का कोई संरक्षक मित्र होगा न सिफ़ारिश करने वाला कि जिसकी बात मानी जायेगी।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾

(१९) वह आँखों की बेईमानी को तथा छाती की गुप्त बातों को (भली-भाँति) जानता है।[4]

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ

(२०) तथा अल्लाह (तआला) ठीक-ठीक निर्णय कर देगा, और उसके अतिरिक्त जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे किसी बात का भी निर्णय

---

[1]इसलिए कि उसे बंदों की भाँति सोच-विचार की आवश्यकता न होगी।

[2] آزفة (आज़िफ़ः) का अर्थ है समीप आने वाली। यह क़यामत (प्रलय) का नाम है, इसलिए की वह भी समीप आने वाली है।

[3]अर्थात उस दिन भय के कारण दिल अपने स्थान से हट जायेंगे كاظمين (काज़िमीन) अर्थात शोक से भरे हुए अथवा रोते हुए, या चुप, इसके यह तीनों अर्थ किये गये हैं।

[4]इसमें अल्लाह तआला के पूर्ण ज्ञान का वर्णन है कि उसे सभी वस्तुओं का ज्ञान है, छोटी हो अथवा बड़ी, सूक्ष्म हो अथवा स्थूल, उच्च श्रेणी की हो या निम्न श्रेणी की। इसलिए इन्सान को चाहिए कि उसके ज्ञान तथा सर्वज्ञता की यह स्थिति है तो उसकी अवज्ञा से बचे तथा सही अर्थों में उसका भय अपने भीतर पैदा करे। आँखों की बेईमानी चोरी से देखना है, जैसे रास्ता चलते किसी सुंदरी को कंखियों से देखना। सीनों की बातों में वे शंसय भी आ जाते हैं जो इन्सान के मन में पैदा होती रहती हैं। वह जब तक शंसय ही रहते हैं अर्थात एक क्षण के लिये आते-जाते रहते हैं तब तक तो वह पकड़ के योग्य नहीं होंगे किन्तु वह जब संकल्प का रूप धारण कर लें तो फिर उन पर पकड़ हो सकती हैं, चाहे उन्हें करने का अवसर इन्सान को मिले अथवा न मिले।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

नहीं कर सकते,[1] वस्तुत: अल्लाह तआला भली-भाँति सुनने वाला तथा भली-भाँति देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾

(२१) क्या यह लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पूर्व थे उनका परिणाम कैसा कुछ हुआ ? वे शक्ति एवं बल तथा धरती पर अपनी स्मृतियों के आधार पर इनकी अपेक्षा अत्याधिक थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उनके पापों के कारण पकड़ लिया, तथा कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह की यातनाओं से बचा लेता।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ

(२२) यह इस कारण कि उनके पास उनके पैग़म्बर चमत्कार ले-ले कर आते थे तो वे अस्वीकार कर देते थे,[3] तो अल्लाह उन्हें पकड़

---

[1]इसलिए कि न उन्हें किसी वस्तु का ज्ञान है न सामर्थ्य, वह निश्चेत भी हैं तथा असमर्थ भी, जबकि निर्णय के लिए ज्ञान तथा अधिकार दोनों की आवश्यकता है तथा यह दोनों गुण मात्र अल्लाह के पास हैं। अत: मात्र उसी को यह अधिकार पहुँचता है कि वह निर्णय करे तथा वह वस्तुत: सत्य के साथ निर्णय करेगा क्योंकि न उसे किसी का भय होगा न किसी से अभिलाषा तथा लालच।

[2]विगत आयतों में आख़िरत (परलोक) कि स्थितियों का वर्णन था। अब उन्हें संसार की स्थितियों से सावधान किया जा रहा है कि यह लोग तनिक धरती में चल-फिर कर उन जातियों का परिणाम देखें जो इनसे पहले इस अपराध में नाश की गईं, जबकि विगत जातियाँ शक्ति एवं स्मृतियों में इनसे कहीं बढ़ कर थीं। परन्तु जब उन पर अल्लाह का प्रकोप आया तो उन्हें कोई नहीं बचा सका। इसी प्रकार तुम पर भी प्रकोप आ सकता है तथा यदि यह आ गया तो फिर तुम्हारा कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

[3]यह उनके विनाश के कारण का वर्णन है, जो है अल्लाह की आयतों का इंकार तथा पैग़म्बरों को झुठलाना। अब नबूअत तथा रिसालत (दूतत्व) का क्रम समाप्त हो गया है फिर भी विश्व एवं प्राणियों में अल्लाह की असंख्य निशानियाँ बिखरी पड़ी हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा-दिक्षा तथा आमन्त्रण एवं उपदेश द्वारा विद्वान एवं सत्य के प्रचारक

إِنَّهُۥ قَوِيٌّ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

लेता था । निःसंदेह वह अत्यन्त शक्तिशाली तथा कठोर यातनाओं वाला है ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِـَٔايَٰتِنَا وَسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपनी आयतों (चिन्हों) तथा स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा ।[1]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَقَٰرُونَ فَقَالُوا۟ سَٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

(२४) फ़िरऔन तथा हामान एवं क़ारून की ओर तो उन्होंने कहा कि (यह तो) जादूगर एवं झूठा है ।[2]

فَلَمَّا جَآءَهُم بِٱلْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا۟

(२५) तो जब उनके पास मूसा (अलैहिस्सलाम) हमारी ओर से सत्य (धर्म) लेकर आये तो

उनके स्पष्टीकरण तथा चिन्ह बताने के लिए विद्यमान हैं । अतः आज भी जो अल्लाह की आयतों से मुंह फेरेगा तथा धर्म एवं धर्म-विधान से विमुख होगा उसका दुष्परिणाम रिसालत का इंकार करने तथा झुठलाने वालों से भिन्न नहीं होगा ।

[1]आयात से अभिप्राय वह नौ निशानियाँ हैं जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है, अथवा लाठी तथा ज्योतिर्मय हाथ वाले दो बड़े खुले चमत्कार हैं । سُلطان مبين से अभिप्राय शक्तिशाली प्रमाण तथा खुली दलीलें (तर्क) हैं जिनका कोई उत्तर संभव नहीं था सिवाय ढीटाई तथा निर्लज्जा के ।

[2]फ़िरऔन मिश्र (इजिप्ट) के निवासी क़िब्त नामक जाति का राजा था, बड़ा क्रूर तथा निर्दयी तथा महा पालनहार होने का दावेदार । उसने आदरणीय मूसा की जाति को दास बना रखा था तथा उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार करता था, जैसाकि क़ुरआन के अनेक स्थानों पर उसका विवरण है । हामान, फ़िरऔन का मंत्री और विशेष परामर्श देने वाला था तथा क़ारून समय का बड़ा धनी पुरूष था । उन सभों ने पहले लोगों की भाँति ईशदूत मूसा को झुठलाया तथा उन्हें जादूगर एवं मिथ्यावादी कहा । जैसे दूसरे स्थान पर कहा गया :

﴿ كَذَٰلِكَ مَآ أَتَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا۟ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۞ أَتَوَاصَوْا۟ بِهِۦ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴾

"अर्थात इसी प्रकार जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं, उन के पास जो भी संदेशवाहक आया उन्होंने कह दिया कि यह जादूगर है अथवा पागल है । क्या यह उस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं ? नहीं, बल्कि यह सभी सीमा उल्लंघन करने वाले हैं ।" (*अज़्ज़ारियात-५२,५३*)

اقْتُلُوٓا أَبْنَآءَ الَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُۥ وَاسْتَحْيُوا نِسَآءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ ﴿٢٥﴾

उन्होंने कहा कि इसके साथ जो ईमानवाले हैं उनके पुत्रों को तो मार डालो एवं पुत्रियों को जीवित रखो।[1] तथा काफ़िरों का जो बहाना है वह त्रुटि पर ही है।[2]

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِىٓ أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُۥٓ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِى الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा फ़िरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को मार डालूँ[3] तथा इसे चाहिए कि अपने प्रभु को पुकारे,[4] मुझे तो डर है कि यह कहीं तुम्हारा धर्म न बदल डाले अथवा देश में कोई बहुत बड़ा उपद्रव न उत्पन्न कर दे।[5]

---

[1]फ़िरऔन यह काम पहले ही कर रहा था ताकि वह शिशु पैदा ही न हो जो ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार उसके राज्य के लिए खतरा हो सकता था। यह दोबारा आदेश उसने आदरणीय मूसा के अपमान एवं अवहेलना के दिया तथा इसलिए भी कि मूसा की जाति, इस्राईल की संतान मूसा को अपने लिये विपदा एवं अशुभ समझे, जैसाकि वास्तव में उन्होंने कहा, ﴿أُوذِينَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِنۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا﴾ "हे मूसा, तेरे आने से पूर्व भी हम यातना में रहे तथा तेरे बाद भी हमारी यही दशा है।" (*अल-आराफ़-१२९*)

[2]अर्थात उससे वह जो लक्ष्य प्राप्त करना चाहता था कि इस्राईल की संतान की शक्ति में अधिकता तथा उसके मान में कमी न हो, यह उसे प्राप्त नहीं हुआ अपितु अल्लाह ने फ़िरऔन तथा उसकी जाति ही को डूबो दिया तथा इस्राईल की संतान को शुभ भूमि का स्वामी बना दिया।

[3]यह संभवतः फ़िरऔन ने उन लोगों से कहा जो उसे मूसा अलैहिस्सलाम की हत्या से रोकते थे।

[4]यह फ़िरऔन की अकड़ का प्रदर्शन है कि मैं देखूँगा उसका प्रभु उसे कैसे बचाता है, उसे पुकार कर देख ले। अथवा प्रभु ही का इंकार है कि उसका कौन सा प्रभु है जो बचा लेगा, क्योंकि वह प्रभु तो स्वयं ही को कहता था।

[5]अर्थात अल्लाह के सिवाय अन्य की इबादत से हटाकर अल्लाह की इबादत में न लगा दे अथवा उसके कारण उपद्रव न उत्पन्न हो जाये। अभिप्राय यह था कि यदि उसकी बात मेरी जाति के कुछ लोगों ने मान ली तो जो नहीं मानते उनसे तर्क-वितर्क करेंगे, जिससे उनके बीच लड़ाई-झगड़ा होगा जो उपद्रव का कारण बनेगा। इस प्रकार तौहीद

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि मैं अपने तथा तुम्हारे प्रभु की शरण में आता हूँ प्रत्येक उस अहंकारी व्यक्ति (की बुराई) से जो हिसाब (लेखा-जोखा) के दिन पर ईमान नहीं रखता ।[1]

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा एक ईमानवाले व्यक्ति ने जो फ़िरऔन के परिवार में से था तथा अपना ईमान छिपाये हुए था, कहा कि क्या तुम एक व्यक्ति की मात्र इस बात पर हत्या करते हो कि वह कहता है कि मेरा प्रभु अल्लाह है तथा तुम्हारे प्रभु की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आया है,[2] यदि वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर है तथा यदि सच्चा है तो वह जिन (यातनाओं) का तुमको वचन दे रहा है उसमें से कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा ।[3] अल्लाह (तआला)

(एकेश्वरवाद) के आमंत्रण को उस ने उपद्रव का कारण बताया जबकि उपद्रवी वह स्वयं था, क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की उपासना ही उपद्रव का मूल कारण है ।

[1]ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम को जब यह पता लगा कि फ़िरऔन मुझे हत कर देना चाहता है तो उन्होंने उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह से प्रार्थना की । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब शत्रु से भय होता तो यह दुआ (प्रार्थना) करते ।

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ».

"हे अल्लाह ! हम तुझको उनके मुक़ाबिले में करते हैं तथा उनकी उद्दण्डता से तेरी शरण चाहते हैं ।" (मुसनद अहमद ४\४१५)

[2]अर्थात यह अल्लाह के प्रभु होने पर यूँ ही ईमान नहीं रखता बल्कि उसके पास अपने इस सिद्धांत के स्पष्ट प्रमाण हैं ।

[3]यह उसने न्यूनता के रूप में कहा कि यदि तुम उसके प्रमाणों से संतुष्ट नहीं हो तथा उसकी दावत (आमन्त्रण) तथा उसकी सच्चाई तुम पर स्पष्ट नहीं हुई तब भी समझ-बूझ तथा सतर्कता की बात यही है कि उसको उसकी अवस्था पर छोड़ दिया जाये तथा

उनको मार्गदर्शन नहीं करता जो सीमा उल्लंघन करने वाले तथा झूठे हों ।[1]

(२९) हे मेरे समुदाय के लोगो ! आज तो राज तुम्हारा है कि इस धरती पर तुम प्रभावशाली हो[2] परन्तु यदि अल्लाह (तआला) का प्रकोप हम पर आ गया, तो कौन हमारी सहायता करेगा ?[3] फ़िरऔन बोला कि मैं तो तुम्हें वही सलाह दे रहा हूँ जो स्वयं देख रहा हूँ तथा मैं तो तुम्हें भलाई का मार्ग ही बता रहा हूँ ।[4]

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ
فِى الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ
بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ
مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ
اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

(३०) तथा उस ईमानवाले ने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मुझे तो भय है कि तुम

وَقَالَ الَّذِىْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّىْٓ اَخَافُ

उसे छेड़ा न जाये । यदि वह झूठा हो तो अल्लाह तआला स्वयं ही उसे इस झूठ का बदला संसार तथा परलोक में दे देगा । तथा यदि वह सच्चा है तथा तुमने उसे यातनायें दीं तो फिर निश्चय वह तुम्हें जिन प्रकोपों से डराता है, तुम पर उनमें से कोई प्रकोप आ सकता है ।

[1]इसका अभिप्राय यह है कि यदि वह झूठा होता (जैसाकि तुम विश्वास दिलाते हो) तो अल्लाह उसे प्रमाणों तथा चमत्कारों से सुशोभित न करता, जबकि उसके पास यह चीज़ें मौजूद हैं । दूसरा अभिप्राय है कि यदि वह झूठा है तो अल्लाह तआला स्वयं ही उसे अपमानित तथा उसका सत्यनाश कर देगा । तुम्हें उसके विरोध में कुछ करने की आवश्यकता नहीं ।

[2]अर्थात यह अल्लाह का तुम पर उपकार है कि तुमको धरती पर अधिपत्य प्रदान किया है । उसकी कृतज्ञता दिखाओ तथा उसके संदेष्टा को झुठला कर अल्लाह का क्रोध मोल न लो ।

[3]यह सैनिक तथा फ़ौजी तुम्हारे कुछ काम न आयेंगे, न अल्लाह के प्रकोप को ही टाल सकेंगे यदि वह आ गया । यहाँ तक उस ईमानवाले का कथन था जो ईमान छुपाये हुए था ।

[4]फ़िरऔन ने अपने सांसारिक वैभव तथा प्रताप के कारण झूठ बोला तथा कहा कि मैं जो कुछ देख रहा हूँ वही तुम्हें बतला रहा हूँ तथा मेरा बताया हुआ मार्ग ही सही है, जबकि ऐसा नहीं था ।(وما أمرُ فرعونَ برَشِيد)(हूद-९७)

عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

पर भी वैसी ही दिन (यातना) न आये जो अन्य समुदायों पर आया।

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

(३१) जैसे नूह के सम्प्रदाय तथा आद एवं समूद तथा उनके पश्चात वालों का (हाल हुआ)।[1] तथा अल्लाह अपने बंदों पर किसी प्रकार का अत्याचार करना नहीं चाहता।[2]

وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हे मेरी जाति के लोगो ! मुझे तो तुम पर हाँक पुकार के दिन का भी भय है।[3]

يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

(३३) जिस दिन तुम पीठ फेर कर लौटोगे,[4] तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा; तथा जिसे अल्लाह भटका दे उसका मार्गदर्शक कोई नहीं।[5]

---

[1]यह बात उस ईमानवाले व्यक्ति ने समझाई तथा अपने समुदाय को पुनः डराया कि यदि अल्लाह के रसूल को झुठलाने पर हम अड़े रहे तो ख़तरा है कि विगत समुदायों की भाँति अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जायेंगे।

[2]अर्थात अल्लाह ने जिन्हें भी नाश किया उनके पापों के बदले में तथा रसूलों को झुठलाने तथा उनके विरोध के कारण ही किया। अन्यथा वह करूणाकारी दयालु प्रभु अपने बंदों पर अत्याचार का इरादा ही नहीं करता। सम्प्रदायों का विनाश प्रतिकार के नियम का अनिवार्य परिणाम है जिससे कोई समुदाय अथवा व्यक्ति अलग नहीं है।

[3]تَنَادي (तनादी) का अर्थ एक-दूसरे को पुकारना है। क़यामत को يَومَ التناد (पुकारने का दिन) इसलिए कहा गया है कि उस दिन एक-दूसरे को पुकारेंगे। स्वर्गवासी नरकवासियों को तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे। (*अल-आराफ़-४८,४९*) कुछ कहते हैं कि मीज़ान (कर्मपत्र के तराज़ू) के पास एक फ़रिश्ता होगा। जिसकी नेकियों (पुण्य के कर्मों) का पलड़ा हलका होगा उसके दुर्भाग्य का वह फ़रिश्ता चीख़कर एलान करेगा। कुछ कहते हैं कि कर्मों के अनुसार लोगों को पुकारा जायेगा, जैसे स्वर्गवासियों को, हे स्वर्गवासियो ! तथा नरकवासियों को, हे नरकवासियो ! इब्ने कसीर कहते हैं कि इमाम बग़वी का यह कथन बहुत ही अच्छा है कि इन सभी बातों ही के कारण यह नाम रखा गया है।

[4]अर्थात موقف (मौक़फ़-मैदाने महशर) से नरक की ओर जाओगे अथवा हिसाब के बाद वहाँ से भागोगे।

[5]जो उसे सन्मार्ग दिखा सके अर्थात उस पर चला सके।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ
مِّمَّا جَاءَكُم بِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ
قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِن بَعْدِهِ
رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उससे पूर्व तुम्हारे पास यूसुफ़ निशानियाँ ले कर आये[1] फिर भी तुम उनकी लायी हुई निशानियों में शंका एवं सन्देह ही करते रहे,[2] यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गयी[3] तो तुम कहने लगे कि इनके पश्चात तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं,[4] इसी प्रकार अल्लाह भटकाता है प्रत्येक उस व्यक्ति को जो सीमा उल्लंघन करने वाला तथा शंका एवं संदेह करने वाला हो ।[5]

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ
بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا

(३५) जो बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आया हो अल्लाह की आयतों के विषय में झगड़ते हैं,[6] अल्लाह के निकट एवं ईमानवालों के निकट

---

[1]अर्थात हे मिश्र के निवासियों ईश्दूत मूसा से पहले इसी क्षेत्र में जिसमें तुम बस रहे हो, ईश्दूत यूसुफ़ भी प्रमाणों तथा तर्कों के साथ आये थे जिसमें तुम्हारे पूर्वजों को ईमान की दावत दी गई थी । अर्थात جاءكم (तुम्हारे पास आये) से तात्पर्य جاء إلى آبائكم (तुम्हारे पूर्वजों के पास आये) हैं ।

[2]किन्तु तुम उस पर भी ईमान नहीं लाये तथा उनके आमंत्रण में शंका तथा सन्देह करते रहे ।

[3]अर्थात ईश्दूत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का निधन हो गया ।

[4]तुम्हारी रीति प्रत्येक पैग़म्बर को झुठलाने तथा उनका विरोध करने की रही है । इसलिए समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा । भावार्थ यह है कि रसूल का आना अथवा न आना तुम्हारे लिए समान है । अथवा यह अभिप्राय है कि अब ऐसा पुरूषोत्तम कहाँ पैदा हो सकता है जो रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित हो । मानो आदरणीय यूसुफ़ के निधन के बाद उनके महत्व का इक़रार था, तथा बहुत से लोग प्रत्येक महत्वपूर्ण इन्सान के निधन के पश्चात यही कहते हैं ।

[5]अर्थात उस खुली पथभ्रष्टता के समान जिसमें तुम फँसे हो, अल्लाह तआला प्रत्येक उस व्यक्ति को भी कुमार्ग करता है जो बहुत अधिक पाप करता तथा अल्लाह के धर्म, उसकी तौहीद (एकता) तथा उसके वचनों एवं धमकियों में संदेह करता है ।

[6]अल्लाह की ओर से अवतरित कोई प्रमाण उसके पास नहीं है । इसके उपरान्त भी अल्लाह की तौहीद एवं उसके आदेशों में झगड़ते हैं, जैसाकि प्रत्येक युग में अंधविश्वासियों का आचरण रहा है ।

عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

यह तो अत्याधिक अप्रसन्नता की वस्तु है ।[1] अल्लाह (तआला) इसी प्रकार प्रत्येक अहंकारी, अवज्ञा करने वाले व्यक्ति के दिल पर मोहर लगा देता है ।[2]

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝

(३६) तथा फ़िरऔन ने कहा कि हे हामान, मेरे लिए एक उच्च अटारी बना [3] संभवत: मैं उन द्वारों तक पहुँच जाऊँ ।

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّىْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝

(३७) जो आकाश के द्वार हैं तथा मूसा के उपास्य (ईश्वर) को झाँक लूँ [4] तथा मुझको तो पूरा विश्वास है कि वह झूठा है, [5] तथा इसी प्रकार फ़िरऔन के कुकर्म उसे भले दिखाये गये [6] तथा मार्ग से रोक दिया गया,[7] तथा फ़िरऔन का (प्रत्येक) षड़यन्त्र विनाश में ही रहा ।[8]

---

[1]अर्थात उनके दुराचार से अल्लाह तआला ही नाख़ुश नहीं होता अपितु ईमानवाले भी इसे अत्यन्त अप्रिय समझते हैं ।

[2]अर्थात जिस प्रकार इन झगड़ालूओं के दिलों पर मुहर (मुद्रा) लगा दी गई है उसी प्रकार प्रत्येक उस व्यक्ति के दिल पर मोहर लगा दी जाती है जो अल्लाह की आयतों की तुलना में अभिमान तथा उद्दण्डता दिखाता है, जिसके पश्चात उन्हें कुकर्म, तथा बुराई दिखाई नहीं देती ।

[3]यह फ़िरऔन की उद्दण्डता का वर्णन है । उसने अपने मंत्री हामान को एक ऊँचा भवन निर्माण करने का आदेश दिया ताकि उसके द्वारा वह आकाश के द्वारों तक पहुँच जाये । أسباب (अस्बाब) का अर्थ द्वार अथवा मार्ग है । विवरण के लिये देखिये (*अल-क़सस-२८*)

[4]अर्थात देखूं कि आकाश पर वास्तव में कोई पूज्य है ?

[5]इस बात में कि आकाश पर अल्लाह है जो आकाशों तथा धरती का रचयिता तथा उनका व्यवस्थापक है अथवा इस बात में कि वह अल्लाह का रसूल है ।

[6]अर्थात शैतान ने उसे इस प्रकार गुमराह (पथभ्रष्ट) किये रखा तथा उसके कुकर्म उसे अच्छे दिखाई देते रहे ।

[7]अर्थात सत्य तथा सही मार्ग से उसे रोक दिया गया तथा वह पथभ्रष्टता की भूल-भूलैयों में भटकता रहा ।

[8] تباب (तबाब, क्षति, विनाश), अर्थात जो उपाय किया उसका परिणाम उसके पक्ष में

وَقَالَ الَّذِيٓ ءَامَنَ يَٰقَوۡمِ ٱتَّبِعُونِ أَهۡدِكُمۡ سَبِيلَ ٱلرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा उस ईमान वाले व्यक्ति ने कहा कि हे मेरे समुदाय (के लोगो)! तुम (सब) मेरा अनुगमन करो, मैं पुण्य के मार्ग की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा।[1]

يَٰقَوۡمِ إِنَّمَا هَٰذِهِ ٱلۡحَيَوٰةُ ٱلدُّنۡيَا مَتَٰعٞ وَإِنَّ ٱلۡأٓخِرَةَ هِيَ دَارُ ٱلۡقَرَارِ ﴿٣٩﴾

(३९) हे मेरे गिरोह के लोगो! यह सांसारिक जीवन नश्वर संसाधन है[2] (विश्वास करो कि शान्ति) एवं स्थाई घर तो आख़िरत ही है।[3]

مَنۡ عَمِلَ سَيِّئَةٗ فَلَا يُجۡزَىٰٓ إِلَّا مِثۡلَهَاۖ وَمَنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا مِّن ذَكَرٍ أَوۡ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤۡمِنٞ فَأُوْلَٰٓئِكَ يَدۡخُلُونَ ٱلۡجَنَّةَ يُرۡزَقُونَ فِيهَا بِغَيۡرِ حِسَابٖ ﴿٤٠﴾

(४०) जिसने पाप किया है, उसको तो बराबर का बदला ही है;[4] तथा जिसने पुण्य किया है चाहे वह पुरूष हो अथवा महिला तथा वह ईमानदार हो, तो ये लोग[5] स्वर्ग में जायेंगे तथा वहाँ असीम जीविका पायेंगे।[6]

बुरा ही निकला तथा अन्ततः अपनी सेना समेत पानी में डूबा दिया गया।

[1]फ़िरऔन की जाति में से ईमान लाने वाला फिर बोला तथा कहा कि दावा तो फ़िरऔन भी करता है कि मैं तुम्हें सीधे मार्ग पर चला रहा हूँ। किन्तु वास्तविकता यह है कि फ़िरऔन मार्ग से विचलित है। मैं जिस मार्ग के चिन्ह बता रहा हूँ वह सीधा मार्ग है, जिसकी ओर तुम्हें ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम आमन्त्रित कर रहे हैं।

[2]जिसका जीवन कुछ दिन का है तथा वह भी आख़िरत (परलोक) की अपेक्षा प्रातः अथवा संध्या की एक घड़ी के बराबर है।

[3]जिसका विलय तथा विनाश नहीं, न वहाँ से स्थानान्त्रण होगा। कोई नरक में जाये अथवा स्वर्ग में, सबका जीवन सदा के लिए होगा। एक सुख-सुविधा का जीवन, दूसरा दुर्भाग्य तथा यातना का जीवन। मृत्यु न नरकवासियों को आयेगी न स्वर्गवासियों को।

[4]अर्थात बुराई के समान ही प्रतिकार होगा, अधिक नहीं तथा उसके अनुकूल ही यातना होगी जो न्याय तथा इंसाफ़ का दर्पण होगा।

[5]अर्थात वह जो ईमानदार भी होंगे तथा अच्छे कर्मों के पालन करने वाले भी। उसका खुला अभिप्राय यह है कि सत्कर्म के बिना ईमान अथवा ईमान के बिना सत्कर्म का अल्लाह के निकट कोई मूल्य नहीं होगा। अल्लाह के पास सफलता के लिए ईमान के साथ सदाचार तथा सदाचार के साथ ईमान आवश्यक है।

[6]अर्थात बिना अनुमान तथा हिसाब के अनुकम्पायें सुलभ होंगी जिनकी समाप्ति का भी

وَيٰقَوْمِ مَا لِيٓ أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُونَنِيٓ إِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा हे मेरी जाति के लोगो ! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें मोक्ष की ओर बुला रहा हूँ,[1] तथा तुम मुझे नरक की ओर बुला रहे हो ।[2]

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَأُشْرِكَ بِهِۦ مَا لَيْسَ لِي بِهِۦ عِلْمٌ وَأَنَا۠ أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفّٰرِ ﴿٤٢﴾

(४२) तुम मुझे यह आमन्त्रण दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ तथा उसके साथ शिर्क करूँ जिसका कोई ज्ञान मुझे नहीं; तथा मैं तुम्हें प्रभावशाली, क्षमा करने वाले (उपास्य) की ओर आमन्त्रित कर रहा हूँ ।[3]

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِيٓ إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُۥ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا

(४३) यह निश्चित बात है[4] कि तुम मुझे जिसकी ओर आमन्त्रित कर रहे हो वह न तो संसार में पुकारने के योग्य है[5] तथा न

कोई भय नहीं होगा ।

[1]तथा वह यह कि मात्र एक अल्लाह की उपासना करो जिसका कोई साझी नहीं तथा उसके रसूल को मानो जिसे उसने तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए भेजा है ।

[2]अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) की जगह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का आमन्त्रण दे रहे हो जो मनुष्य को नरक में ले जाने वाला है जैसाकि आगामी आयत में स्पष्ट किया गया है ।

[3] عَزِيز (प्रभुत्वशाली) जो काफ़िरों से बदला लेने तथा यातना देने पर समर्थ है । غَفَّار (ग़फ़्फ़ार), अपने मानने वालों की ग़लतियों तथा भूल को क्षमा करने वाला तथा उन पर पर्दा डालने वाला । जबकि तुम जिनकी उपासना की ओर मुझको बुला रहे हो वह अति हीन तथा पतित हैं, न वे सुन सकते न उत्तर दे सकते हैं, किसी को लाभ पहुँचाने पर सामर्थ है न हानि पहुँचाने पर ।

[4] لَا جَرَم यह बात निश्चित है अथवा इसमें झूठ नहीं ।

[5]अर्थात वह किसी की पुकार सुनने की योग्यता ही नहीं रखते कि किसी को लाभ पहुँचा सकें, अथवा ईश्वरतत्व (उपास्य) का अधिकार उन्हें प्राप्त हो । इस का लगभग वही भावार्थ है । जो इस आयत और इन जैसी अनेक आयात में वर्णन किया गया है ।

﴿ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُۥٓ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَٰمَةِ وَهُمْ عَن دُعَآئِهِمْ غَٰفِلُونَ ﴾

(अल-अहक़ाफ़-५)

وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

आख़िरत[1] में तथा यह (भी निश्चित बात है) कि हम सबका लौटना अल्लाह ही की ओर है[2] तथा सीमा से गुज़र जाने वाले निःसंदेह नरक वाले हैं ।[3]

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

(४४) तो आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे ।[4] मैं अपना मामला अल्लाह को समर्पित करता हूँ ।[5] निःसंदेह अल्लाह (तआला) भक्तों को देखने वाला है ।[6]

﴿ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ﴾

"यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और यदि (मान लो कि) सुन भी लें तो स्वीकार नहीं कर सकते ।" (-फ़ातिर-१४)

[1]अर्थात आख़रित में ही किसी की पुकार सुनकर किसी को मुक्त कराने अथवा सिफ़ारिश ही करने पर समर्थ हों ? यह भी संभव नहीं है। ऐसी चीजें भला इस योग्य हो सकती हैं कि वह पूज्य बनें तथा उनकी पूजा की जाये ?

[2]जहाँ प्रत्येक का हिसाब होगा तथा कर्मानुसार अच्छा बुरा बदला दिया जायेगा ।

[3]अर्थात काफ़िर तथा मुशरिक जो अल्लाह की अवज्ञा में सीमा उल्लंघन कर जाते हैं। इस प्रकार जो अत्याधिक पापी मुसलमान होंगे, जिनकी अवज्ञा अति की सीमा तक पहुँची होगी उन्हें भी कुछ समय नरक की यातना भुगतनी होगी। फिर बाद में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश अथवा अल्लाह की इच्छा से उनको नरक से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश करा दिया जायेगा ।

[4]शीघ्र वह समय आयेगा जब मेरी बातों की सच्चाई तथा जिन बातों से रोकता था उनकी बुराई, तुम पर स्पष्ट हो जायेगी। फिर तुम पश्चाताप करोगे किन्तु वह समय ऐसा होगा कि लज्जा भी कोई लाभ न देगी।

[5]अर्थात उसी पर भरोसा करता तथा उसी से प्रत्येक समय सहायता माँगता हूँ तथा तुमसे सम्बन्ध तोड़ने तथा अलग होने की घोषणा करता हूँ।

[6]अर्थात वह उन्हें देख रहा है । फिर वह संमार्ग के पात्र को मार्ग दिखाता है तथा पथभ्रष्टता के पात्र को कुमार्ग कर देता है। इन बातों में जो हिक्मत है उनको वही भली-भाँति जानता है।

(४५) तो उसे अल्लाह (तआला) ने समस्त बुराईयों से सुरक्षित रख लिया जो उन लोगों ने सोच रखा था[1] तथा फ़िरऔन के अनुयायियों पर बुरे प्रकार का प्रकोप टूट पड़ा ।[2]

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝

(४६) अग्नि है जिसके समक्ष ये प्रत्येक प्रातः एवं संध्या को लाये जाते हैं;[3] तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी (आदेश होगा कि)

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۗ اَدْخِلُوْٓا

---

[1]अर्थात उसकी जाति क़िब्त ने उस ईमानदार के सत्य के प्रदर्शन के कारण उसके विपरीत जो षड़यन्त्र किये तथा चालें चलीं थीं, उन सबको असफल बना दिया तथा उसे आदरणीय मूसा के साथ मुक्ति प्रदान कर दिया तथा परलोक में उसका घर स्वर्ग होगा।

[2]अर्थात दुनिया में उन्हें समुद्र में डूबा दिया गया तथा परलोक में उनके लिये नरक की घोर यातना है।

[3]इस आग पर "बर्ज़ख" में अर्थात क़ब्रों में वे लोग नित्य प्रातः तथा संध्या पेश किये जाते हैं, जिससे क़ब्र की यातना सिद्धि होती है, जिसका कुछ लोग इंकार करते हैं। हदीसों में तो बड़े विस्तार से क़ब्र की यातना पर प्रकाश डाला गया है। जैसे आदरणीया आएशा (رضي الله عنها) के प्रश्नोत्तर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«نَعَمْ ! عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ».

"हां, क़ब्र की यातना सत्य है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनायज़, बाबु माजाअ फी अज़ाबिल क़ब्रे)

इसी प्रकार एक दूसरी हदीस में फ़रमाया गया,

"जब तुममें से कोई मरता है तो (क़ब्र में) प्रातः-संध्या उसका स्थान प्रस्तुत किया जाता है।" अर्थात यदि वह स्वर्ग का पात्र है तो स्वर्ग तथा नरक का पात्र हो तो नरक उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता है तथा कहा जाता है कि यह तेरा मूल स्थान है, जहां क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुख़ारी, बावुल मय्यते युअ्रज़ु अलैहि मक़अदोहू बिल ग़दाते वल अशीये, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु अर्ज़े मकअदिल मय्यते)

इसका अभिप्राय यह है कि जो क़ब्र की यातना का इंकार करते हैं, वह क़ुरआन तथा हदीस दोनों की व्याख्या को नहीं मानते।

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

फ़िरऔन के अनुयायियों को अति कठोर यातना में डालो ।[1]

وَ اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा जबकि नरक में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग अंहकारियों से (जिनके ये अधीन थे) कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अनुयायी थे तो क्या अब तुम हमसे इस अग्नि का कोई भाग हटा सकते हो ?

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

(४८) वे बड़े लोग उत्तर देंगे कि हम तो सभी इसी अग्नि में हैं, अल्लाह (तआला) अपने बंदों के मध्य निर्णय कर चुका है ।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा समस्त नरकवासी (एकत्रित होकर) नरक के रक्षकों से कहेंगे कि तुम ही अपने प्रभु से प्रार्थना करो कि वह किसी दिन भी हमारी यातना में कमी कर दे ।

قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ؕ

(५०) वे उत्तर देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल चमत्कार लेकर नहीं आये थे, वे कहेंगे कि क्यों नहीं । वे कहेंगे कि फिर तुम

---

[1]इससे पूर्ण स्पष्ट है कि आग पर पेश किये जाने का मामला जो प्रातः-संध्या होता है, क़यामत के पहले बर्ज़ख़ व क़ब्र ही का जीवन है । प्रलय के दिन उनको क़ब्र से निकालकर कड़ी यातना अर्थात नरक में डाल दिया जायेगा । 'आले फ़िरऔन' से अभिप्राय स्वयं फ़िरऔन तथा उसकी जाति एवं उसके सभी अनुयायी हैं । यह कहना कि हमें तो क़ब्र में मृत आराम से पड़ा दिखाई देता है, उसे यदि यातना हो तो इस स्थिति में दिखाई न दे, बकवास है क्योंकि यातना के लिए यह आवश्यक नहीं कि हमें दिखाई भी पड़े । अल्लाह हर प्रकार से यातना देने पर समर्थ है । क्या हम देखते नहीं कि एक व्यक्ति स्वप्न में अति दुखद दृश्य देख कर बड़ी बेचैनी तथा दुख का संवेदन करता है, किन्तु देखने वाले को तनिक प्रतीत नहीं होता कि यह सोया व्यक्ति घोर दुख में है । इस के उपरान्त भी क़ब्र की यातना का इंकार मात्र हठधर्मी है । बल्कि जागृत अवस्था में भी इंसान को जो तकलीफ़ें होती हैं वह स्वयं प्रदर्शित नहीं होतीं बल्कि केवल इंसान का तड़पना तथा तिलमिलाना प्रकट होता है, और यह भी उस दशा में जब वह तड़पे तथा तिलमिलाये ।

وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۞

ही प्रार्थना करो[1] तथा काफ़िरों की प्रार्थना मात्र (अप्रभावी तथा) अकारथ है ।[2]

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۞

(५१) निश्चय हम अपने रसूलों की तथा ईमान वालों की साँसारिक जीवन में भी सहायता करेंगे[3] तथा उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे ।[4]

---

[1]हम ऐसे लोगों के लिए क्योंकर कुछ कह सकते हैं जिनके पास अल्लाह के संदेशवाहक प्रमाण तथा चमत्कार लेकर आये परन्तु उन्होंने चिंता नहीं की ।

[2]अंततः वह अल्लाह से स्वयं ही गुहार करेंगे परन्तु उसकी वहाँ सुनवाई नहीं होगी, इसलिए कि संसार में उन पर तर्क पूरा किया जा चुका था । अब आख़िरत तो क्षमा-याचना, ईमान एवं कर्म की जगह नहीं, वह तो प्रतिकार गृह है । संसार में जो किया होगा उसका फल वहाँ भोगना होगा ।

[3]अर्थात उनके शत्रुओं को अपमानित करेंगे तथा उन्हें प्रभुत्व प्रदान करेंगे । कुछ लोगों के मन में यह शंका उत्पन्न हो सकती है कि कुछ नबी हत कर दिये गये, जैसे आदरणीय यहया एवं ज़करिया (अलैहिमुस्सलाम) आदि तथा कुछ प्रवास के लिए बाध्य हुए, जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं आपके सहाबा (सहचर रिज़वानुल्ललाहे अलैहिम अजमईन) सहायता के वचन के उपरान्त ऐसा क्यों हुआ ? वास्तव में यह वादा साधारण स्थिति एवं अधिकता के आधार पर है । अतः कुछ स्थिति में तथा कुछ व्यक्तियों पर काफ़िरों का प्रभुत्व इसके प्रतिकूल नहीं । अथवा अभिप्राय यह है कि सामयिक रूप से कभी अल्लाह की हिक्मत एवं इच्छा के अधीन काफ़िरों को प्रभुत्व दे दिया जाता है किन्तु अन्ततः ईमानवाले ही प्रभावशाली तथा सफल होते हैं । जैसे आदरणीय ज़करिया तथा यहया के हत्यारों पर बाद में अल्लाह तआला ने उनके शत्रुओं को नियुक्त कर दिया, जिन्होंने उनके रक्त से अपनी प्यास बुझाई तथा उन्हें अपमानित एवं निरादर किया । जिन यहूदियों ने ईशदूत ईसा को फाँसी देकर मारना चाहा, अल्लाह ने उन यहूदियों पर रोमियों को ऐसी विजय दी कि उन्होंने यहूदियों को अपमानजनक यातनायें चखाईं । इस्लाम के पैग़म्बर तथा आपके अनुयायी वस्तुतः प्रस्थान करने पर बाध्य हुए किन्तु बद्र, ओहुद, अहज़ाब तथा ख़ैबर फिर मक्का विजय के द्वारा अल्लाह ने जिस प्रकार मुसलमानों की सहायता की तथा अपने पैग़म्बर एवं ईमानवालों को जिस प्रकार प्रभुत्व प्रदान किया, उसके पश्चात अल्लाह की सहायता में क्या शंका रह जाती है ? (इब्ने कसीर)

[4] أشهاد (अश्हाद) यह شهيد (शहीद) का बहुवचन है, जैसे شريف (शरीफ़) का बहुवचन أشراف (अशराफ़) है । क़यामत, (प्रलय) के दिन फ़रिश्ते तथा अम्बिया गवाही देंगे, अथवा फ़रिश्ते यह गवाही देंगे कि हे अल्लाह ! पैग़म्बरों ने तेरा संदेश पहुँचा दिया था किन्तु

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّٰلِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

(५२) जिस दिन अत्याचारियों की विवशता (बहाना) कुछ लाभ न देगी[1] एवं उनके लिए धिक्कार ही होगी तथा उनके लिए बुरा घर होगा।

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ الْكِتَٰبَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा हमने मूसा को मार्गदर्शिका प्रदान की [2] तथा इस्राईल की संतान को इस किताब का उत्तराधिकारी बनाया।[3]

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِى الْأَلْبَٰبِ ﴿٥٤﴾

(५४) कि वह मार्गदर्शन एवं शिक्षा थी बुद्धिमानों के लिए।[4]

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِىِّ

(५५) तो (हे नबी !) तू धैर्य रख। अल्लाह का वचन (नि:संदेह) सत्य ही है, तू अपने पापों की क्षमा माँगता रह [5] तथा सुबह-

---

उनके समुदायों ने झुठला दिया। इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्ललाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके अनुयायी भी गवाही देंगे जैसाकि पहले भी वर्णन किया जा चुका है। इसलिए क़यामत को गवाहों के खड़े होने का दिन कहा गया है। उस दिन ईमानवालों की सहायता करने का अभिप्राय है उनको उनके सत्कर्मों का प्रतिफल दिया जायेगा तथा उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिया जायेगा।

[1]अर्थात अल्लाह की दया से दूरी तथा फटकार तथा विवशता एवं सफाई देने का लाभ इसलिए नहीं होगा कि वह क्षमा-याचना का स्थान नहीं, अत: क्षमा-याचना व्यर्थ होगी।

[2]अर्थात नुबूवत (दूतत्व) तथा धर्मग्रन्थ तौरात प्रदान किया, जैसे फ़रमाया ﴿إِنَّآ أَنزَلْنَا التَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ﴾ (अल-माएदा-४४)

[3]अर्थात धर्मशास्त्र तौरात ईशदूत मूसा के पश्चात भी शेष रहा जिसके नस्ल दर नस्ल वह उत्तराधिकारी होते रहे। अथवा किताब से अभिप्राय वह सभी धर्मशास्त्र हैं जो इस्राईल वंश के अम्बिया पर अवतरित हुए, इन सभी धर्मशास्त्रों का उत्तराधिकारी इस्राईल की संतान को बनाया।

[4]هُدًى (हूदा) तथा ذِكْرَىٰ (ज़िक्रा) धातु है। तथा अवस्थावाची के रूप में आये हैं। अत: उन पर 'अ' की मात्रा है अर्थात هَادٍ पथ-प्रदर्शक, तथा مُذَكِّر सदुपदेशक। बुद्धिमानों से अभिप्राय स्वच्छ बुद्धि के मालिक हैं क्योंकि वही आकाशीय ग्रंथों से लाभ उठाते हैं तथा मार्गदर्शन एवं सदुपदेश प्राप्त करते हैं। दूसरे लोग तो गधों के समान हैं जिन पर ग्रंथों का भार तो लदा है किन्तु वह उससे बेसुध होते हैं कि उन ग्रंथों में क्या है।

[5]पाप से अभिप्राय वह तनिक-तनिक सी भूल-चूक है जो मानवीय प्रकृति के कारण हो जाती है, जिसका सुधार भी अल्लाह की ओर से कर दिया जाता है। अथवा इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगना) भी

وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

शाम[1] अपने प्रभु का पवित्रतागान एवं महिमा-गान करता रह।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُم بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

(५६) निःसंदेह जो लोग अपने पास किसी प्रमाण के न होने के उपरान्त अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं; उनके दिलों में बड़ाई के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं जो इस बड़ाई तक पहुँचने वाले नहीं,[2] तो तू अल्लाह की शरण माँगता रह, निःसंदेह वह पूर्णरूप से सुनने वाला तथा सबसे अधिक देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति निःसंदेह मनुष्य की उत्पत्ति से बहुत बड़ा कार्य है, परन्तु (यह अन्य बात है कि) अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।[3]

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा अंधा एवं दृष्टिवाला समान नहीं; न वे लोग जो ईमान लाये तथा भले कार्य किये कुकर्मियों के (समान हैं)[4] तुम (बहुत) कम

एक उपासना ही है। पुण्य तथा प्रतिफल में अधिकता के लिए (क्षमा माँगने) का आदेश दिया गया है, अथवा अभिप्राय अनुयायियों को निर्देश देना है कि वह क्षमा-याचना से विमुख न हों।

[1] عَشِيّ (अशी) से दिन का अन्तिम तथा रात का आरम्भिक भाग तथा إِبْكَار (इबकार) से रात का अंतिम तथा दिन का आरम्भिक भाग अभिप्राय है।

[2]अर्थात जो आकाशीय प्रमाण के बिना विवाद तथा तर्क-वितर्क करते हैं वे केवल अहंकार के कारण ऐसा करते हैं। फिर भी उनसे जो उनका लक्ष्य है कि सत्य निर्बल तथा असत्य दृढ़ हो जाये, वह उन्हें प्राप्त न होगा।

[3]अर्थात फिर यह क्यों इस बात से इंकार कर रहे हैं कि अल्लाह इंसानों को पुनः जीवित नहीं कर सकता जब कि यह काम आकाशों तथा धरती के पैदा करने से अत्याधिक सरल है।

[4]अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार अंधा तथा आँख वाला बराबर नहीं, उसी प्रकार ईमानदार तथा काफ़िर, सदाचारी तथा दुराचारी बराबर नहीं। बल्कि क़यामत के दिन उनके मध्य जो बड़ा अंतर होगा वह बिल्कुल खुलकर सामने आ जायेगा।

शिक्षा ग्रहण कर रहे हो।

(५९) क़यामत निश्चय तथा नि:संदेह आने वाली है, परन्तु (यह अन्य बात है कि) अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

(६०) तथा तुम्हारे प्रभु का आदेश (लागू हो चुका) है कि मुझसे प्रार्थना करो मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करूँगा।[1] विश्वास करो कि जो लोग मेरी इबादत से अहंकार करते हैं वे अतिशीघ्र अपमानित होकर नरक में पहुँच जायेंगे।[2]

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

(६१) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए रात्रि

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا

[1]विगत आयत में जब अल्लाह ने क़यामत के घटित होने की चर्चा की तो इस आयत में ऐसा निर्देश दिया जा रहा है, जिसे अपनाकर इंसान परलोक का सौभाग्य प्राप्त कर सके। इस आयत में प्रार्थना से अधिकतर भाष्यकारों ने इबादत (उपासना) तात्पर्य लिया है। जैसा कि हदीस में भी दुआ (प्रार्थना) को इबादत अपितु इबादत का मूल तत्व कहा गया है, «الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ» तथा «الدُّعاءُ مُخُّ العِبَادَةِ» (मुसनद अहमद-४\२७१, मिश्कात-किताबुद दावात)। इसके अतिरिक्त, इसके बाद ﴿يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي﴾ के शब्दों से भी स्पष्ट है कि अभिप्राय उपासना है, कुछ कहते हैं कि दुआ (प्रार्थना) से अभिप्राय प्रार्थना ही है, अर्थात अल्लाह से लाभ की प्राप्ति तथा हानि के निराकरण का प्रश्न करना। क्योंकि दुआ का धार्मिक तथा वास्तविक अर्थ 'माँगना' है। दूसरे अर्थ में उसका प्रयोग वास्तविक अर्थ में नहीं। इसके अतिरिक्त दुआ भी अपने शाब्दिक अर्थ के आधार पर तथा उपरोक्त हदीस के अनुसार भी इबादत (उपासना) ही है, क्योंकि बिना साधन कोई चीज़ किसी से माँगना तथा उससे प्रश्न करना, यह उसकी इबादत (आराधना) ही है। (फ़तहुल क़दीर) अभिप्राय दोनों स्थितियों में एक ही है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को आवश्यकता की माँग तथा सहायता के लिए पुकारना वैध (उचित) नहीं। क्योंकि इस प्रकार साधनों के बिना किसी को काम निकलाने के लिए पुकारना उसकी आराधना है तथा इबादत (आराधना) अल्लाह के अतिरिक्त किसी की वैध (उचित) नहीं।

[2]यह अल्लाह की उपासना से इंकार तथा विमुखता एवं उसमें दूसरों को भी साझी बनाने वालों का दुष्परिणाम है।

فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

बना दी है कि तुम उस में विश्राम कर सको[1] तथा दिन को दिखलाने वाला बना दिया।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) लोगों पर उपकार एवं कृपा करने वाला है परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।[3]

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) यही अल्लाह है तुम सबका पालनपोषण करने वाला, प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा, उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं; फिर किस ओर तुम फिरे जाते हो ?[4]

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) उसी प्रकार वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ

(६४) अल्लाह[5] ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को निवास स्थान[6] तथा आकाश को छत बना दिया,[7] और तुम्हारा रूप दिया तथा बहुत

---

[1]अर्थात रात को अंधेरी बनाया ताकि दैनिक कार्य निलम्बित हो जाये तथा लोग शान्ति से सो सकें।

[2]अर्थात प्रकाशमय बनाया ताकि व्यवसायिक श्रम तथा दौड़-धूप में बाध्यता न हो।

[3]अल्लाह के वरदानों का, न उनको स्वीकार ही करते हैं कुफ्र तथा इंकार के कारण जैसा कि काफ़िरों का आचरण है, अथवा उपकार करने वाले की कृतज्ञता को त्याग तथा उससे आलस्य के कारण जैसा कि मूर्खों की रीति है।

[4]अर्थात फिर तुम उसकी उपासना से क्यों बिदकते हो तथा उसकी तौहीद (एकता) से क्यों फिरते तथा अकड़ते हो।

[5]आगे अल्लाह के उपकारों के कुछ प्रकार वर्णन किये गये हैं ताकि अल्लाह का पूर्ण सामर्थ्य भी स्पष्ट हो तथा उसका अन्य के साझे बिना उपास्य होना भी।

[6]जिसमें तुम निवास करते, चलते-फिरते, व्यवपार करते तथा जीवन निर्वाह करते हो। फिर अंतत: मौत के मुख में जाकर क़्यामत तक के लिए उसी में सोये रहते हो।

[7]अर्थात स्थिर एवं दृढ़ छत, यदि उसके गिरने का भय रहता तो कोई आराम से सो सकता था न किसी के लिए जीवन व्यतीत करना संभव होता।

अच्छा बनाया[1] तथा तुम्हें अति उत्तम वस्तुयें खाने के लिए प्रदान किया ।[2] वही अल्लाह तुम्हारा प्रभु है; तो अति शुभ अल्लाह है समस्त जगत का प्रभु ।

فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَٰتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٦٤﴾

(६५) वह जीवित है जिसके अतिरिक्त कोई सच्चा उपास्य नहीं तो तुम विशुद्ध रूप से उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो,[3] सभी प्रंशसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त संसार का प्रभु है ।

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٦٥﴾

(६६) (आप) कह दीजिए कि मुझे उनकी पूजा करने से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकार रहे हो [4] इस आधार पर कि मेरे पास मेरे प्रभु के प्रमाण पहुँच चुके हैं । मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के प्रभु के आदेश के अधीन हो जाऊँ ।[5]

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَٰتُ مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٦٦﴾

---

[1]जितने भी भूमि पर प्राणी हैं उन सबमें तुम इन्सानों को सबसे सुन्दर तथा संतुलित अंगों का बनाया ।

[2]विभिन्न प्रकार के खाने तुम्हारे लिए सुलभ कराये जो स्वादिष्ट भी हैं तथा बलवर्धक भी ।

[3]अर्थात जब सब कुछ देने तथा करने वाला वही है, दूसरा कोई बनाने में साझी है न अधिकारों में तो फिर उपास्य भी मात्र एक अल्लाह ही है, दूसरा कोई उसमें साझी नहीं हो सकता । सहायता की माँग तथा गुहार भी उसी से करो कि वही सबकी गुहार तथा विनय सुनने पर समर्थ है । दूसरा कोई भी साधनों बिना किसी बात पर समर्थ नहीं । जब यह बात है तो दूसरे कैसे कष्ट निवारक तथा कार्यक्षम हो सकते हैं ?

[4]चाहे वह पत्थर की मूर्तियाँ हो, अम्बिया एवं धर्मात्मा हों तथा समाधियों में गड़े व्यक्ति हों, सहायता के लिए किसी को न पुकारो, उनके नामों के चढ़ावे न चढ़ाओ, उन का जप न करो, उनका भय न खाओ तथा न उनसे आशायें बाँधो, क्योंकि यह इबादत के भेद हैं जो मात्र एक अल्लाह का अधिकार है ।

[5]यह वही धार्मिक तथा बौद्धिक तर्क हैं जिनसे अल्लाह के उपास्य तथा पालनहार होने का प्रमाण मिलता है, जिसकी पवित्र क़ुरआन में जगह-जगह चर्चा की गई है । इस्लाम का

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوٓا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य से,[1] फिर रक्त के लोथड़े से उत्पन्न किया, फिर तुम्हें शिशु बनाकर निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है कि) तुम अपनी पूर्णशक्ति को पहुँच जाओ, फिर बूढ़े बन जाओ ।[2] और तुममें से कुछ की इससे पूर्व ही मृत्यु हो जाती है [3] (तथा वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम निर्धारित आयु तक पहुँच जाओ[4] तथा ताकि तुम सोच समझ लो ।[5]

अर्थ है आत्म-समर्पण तथा झुक जाना, शीश निवा देना। अर्थात अल्लाह के आदेशों के आगे झुक जाऊँ, उससे मुख न फेरूँ । आगे फिर तौहीद (अद्वैत) के कुछ प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

[1]अर्थात तुम्हारे परमपिता आदम को मिट्टी से बनाया जो उनकी सभी संतान के मिट्टी से पैदा होने को अनिवार्य बनाता है । फिर तत्पश्चात मानव वंश-क्रम तथा उसके अस्तित्व की सुरक्षा के लिये उसे वीर्य से संबन्धित कर दिया। अब प्रत्येक मानव इसी वीर्य से पैदा होता है, जो पिता की पीठ से माता के गर्भाशय में जाकर स्थिर हो जाता है, ईशदूत ईसा के सिवाय कि उनका जन्म चमत्कारिक रूप से बिना पिता के हुआ, जैसा कि पवित्र ईशवाणी क़ुरआन के वर्णित विवरण से स्पष्ट है। तथा जिस पर पूरा मुसलमान समुदाय एकमत है।

[2]अर्थात इन सभी स्थितियों तथा अवस्थाओं से गुज़ारने वाला वही है जिसका कोई साझी नहीं।

[3]अर्थात माता के गर्भाशय में विभिन्न अवस्थाओं से गुज़र कर बाहर आने से पहले ही माँ के पेट में कुछ बाल्य अवस्थामें, कुछ युवा अवस्था में तथा कुछ बुढ़ापे से पहले अधेड़ आयु में मर जाते हैं।

[4]अर्थात अल्लाह तआला (परमेश्वर) यह इसलिए करता है ताकि जिसकी जितनी आयु अल्लाह ने लिख दी है, वह उसको पहुँच जाये तथा संसार में उतना जीवन निर्वाह कर ले।

[5]अर्थात जब तुम इन विभिन्न स्थितियों एवं अवस्थाओं पर विचार करोगे कि वीर्य से रक्त, फिर माँस का लोथड़ा, फिर शिशु, फिर युवा अवस्था, फिर अधेड़ तथा बुढ़ापा तो तुम जान लोगे कि तुम्हारा प्रभु भी एक ही है तथा तुम्हारा पूज्य भी एक। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं । इसके अलावा यह भी समझ लोगे कि जो अल्लाह यह सब करता है उसके लिये क़यामत (प्रलय) के दिन इंसानों को पुर्नजीवित करना भी कठिन नहीं है तथा वह निश्चय ही सबको जीवन प्रदान करेगा।

(६८) वही है जो जीवन एवं मृत्यु प्रदान करता है,[1] फिर जब वह किसी कार्य के करने का निश्चय करता है तो उसे केवल यह कहता है कि 'हो जा' बस वह हो जाता है।[2]

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

(६९) क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं,[3] कि वे कहाँ फेर दिये जाते हैं ![4]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾

(७०) जिन लोगों ने किताब को झुठलाया तथा उसे भी जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजा, उन्हें शीघ्र अति शीघ्र वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

(७१) जबकि उनकी गर्दनों में तौक होंगे तथा जंजीरें होंगी, घसीटे जायेंगे।[5]

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾

(७२) खौलते हुए पानी में, तथा फिर नरक की अग्नि में जलाये जायेंगे।[6]

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

---

[1]जीवन देना तथा मारना उसी के अधिकार में है। वह एक निर्जीव वीर्य को अनेक स्थितियों से गुज़ार कर एक जीवित मानव के रूप में ढाल देता है तथा फिर एक निर्धारित समय के पश्चात इंसान को मारकर मौत की वादियों में सुला देता है।

[2]उसके सामर्थ्य की यह दशा है कि उसके शब्द كُنْ (हो जा) से वह वस्तु अस्तित्व में आ जाती है जिसका वह इरादा करे।

[3]इंकार अथवा झुठलाने के लिए अथवा उसके खंडन के लिए।

[4]अर्थात प्रमाणों के प्रत्यक्ष तथा सत्य के स्पष्ट हो जाने के उपरान्त भी वह किस प्रकार सत्य को नहीं मानते। यह आश्चर्य व्यक्त करना है।

[5]यह वह चित्रण है जो नरक में इन झुठलाने वालों का होगा।

[6]मुजाहिद तथा मुकातिल का कथन है कि उनके द्वारा नरक की अग्नि भड़काई जायेगी, अर्थात वे लोग उसका ईंधन बनेंगे।

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) फिर उनसे पूछा जायेगा कि जिन्हें तुम साझीदार ठहराते थे वे कहाँ हैं ?

مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) जो अल्लाह के अतिरिक्त थे,[1] वे कहेंगे कि वे हमसे खो गये[2] बल्कि हम तो इससे पूर्व किसी को भी पुकारते ही न थे ।[3] अल्लाह (तआला) काफ़िरों को इसी प्रकार भटकाता है ।[4]

ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) यह (बदला) है उस वस्तु का जो तुम धरती पर अनायास (अनुचित) फूले न समाते थे तथा (व्यर्थ) इतराते फिरते थे ।[5]

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

(७६) (अब आओ) नरक में सदैव रहने के लिए (उसके) द्वारों में चले जाओ; क्या ही बुरा स्थान है अहंकार करने वालों के लिए ।[6]

---

[1]क्या वह आज तुम्हारी सहायता कर सकते हैं ?

[2]अर्थात पता नहीं कहाँ चले गये हैं । वे हमारी क्या सहायता करेंगे ?

[3]स्वीकार के पश्चात फिर उनकी इबादत (वंदना) को नकार देंगे । जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ﴾ "अल्लाह की सौगन्ध ! हम तो किसी को साझी बनाते ही न थे ।" (*अल-अआम*-२३) कहते हैं कि यह मूर्तियों के होने तथा उनकी उपासना का इंकार नहीं । अपितु इस बात का स्वीकार है कि उनकी इबादत, उपासना अनृत थी क्योंकि वहाँ उन पर स्पष्ट हो जायेगा कि वह ऐसी चीज़ों की उपासना करते रहे जो सुन सकती थीं न देख सकती थीं तथा क्षति पहुँचा सकती थीं न लाभ । दूसरा स्पष्ट अर्थ यह है कि वे शिर्क का मूल से इंकार ही करेंगे । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात इन झुठलाने वालों ही की भाँति अल्लाह काफ़िरों को भी कुमार्ग करता है । अभिप्राय यह है कि निरन्तर झुठलाना तथा कुफ़्र (इंकार), यह ऐसी चीज़ें हैं कि जिनसे इंसानों के दिल काले तथा मैले हो जाते हैं । फिर वे सदा के लिये सत्य को स्वीकार करने की योग्यता से वंचित हो जाते हैं ।

[5]अर्थात तुम्हारी पथभ्रष्टता इस बात का दुष्य परिणाम है कि तुम कुफ़्र, झुठलाने तथा दुराचार एवं कुकर्म में इतना बढ़ गये थे कि उन पर प्रफुल्ल होते तथा इतराते थे । इतराने में अत्याधिक प्रसन्नता का प्रदर्शन है जो अहंकार का द्योतक है ।

[6]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्ते नरकवासियों से हकेंगे ।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तो आप धैर्य रखें। अल्लाह का वचन पूर्ण रूप से सत्य है।[1] उन्हें हमने जो वचन दे रखे हैं उनमें से कुछ हम आपको दिखायें।[2] अथवा उससे पूर्व आपको मृत्यु दें, उनका लौटाया जाना तो हमारी ही ओर है।[3]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

(७८) नि:संदेह हम आपसे पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिनमें से कुछ की (घटनायें) हम आपको सुना चुके हैं तथा उनमें से कुछ की कथायें तो हमने आपको सुनायी ही नहीं।[4] तथा किसी रसूल के (वश में यह) न था कि कोई चमत्कार अल्लाह की आज्ञा के बिना ला सके।[5] फिर जिस समय

---

[1]कि हम काफ़िरों से बदला लेंगे। यह वचन शीघ्र भी पूरा हो सकता है, अर्थात दुनिया ही में हम उनकी पकड़ कर लें अथवा अल्लाह की इच्छानुसार विलम्ब भी संभव है, अर्थात हम क़यामत के दिन उन्हें दण्ड दें। फिर भी यह बात निश्चित है कि यह अल्लाह की पकड़ से बचकर कहीं जा नहीं सकते।

[2]अर्थात आपके जीवन ही में उन्हें यातनाग्रस्त कर दें। तथा ऐसा ही हुआ कि अल्लाह ने काफ़िरों से बदला लेकर मुसलमानों को प्रसन्न किया। बद्र के रण में सत्तर काफ़िर मारे गये, ८ हिजरी में मक्का विजय हो गया तथा फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन में पूरे अरब द्वीप मुसलमानों के अधीन आ गया।

[3]अर्थात यदि नास्तिक सांसारिक पकड़ एवं यातना से सुरक्षित रह भी गये तो फिर जायेंगे कहाँ ? अन्त में मेरे पास ही आयेंगे जहाँ उनके लिये घोर यातना का प्रबन्ध है।

[4]तथा यह संख्या में उनसे अधिक हैं जिनका वर्णन किया गया है, इसलिए कि पवित्र क़ुरआन में मात्र २५ अम्बिया तथा रसूलों की चर्चा तथा उनकी जातियों की अवस्थायें वर्णित हैं।

[5] آيت (आयत) से अभिप्राय यहाँ चमत्कार तथा अद्भुत घटना है जो पैग़म्बर की सत्यता को प्रमाणित करे। काफ़िर ईशदूतों से माँग करते रहे कि हमें अमुक-अमुक वस्तु दिखाओ। जैसे स्वयं अन्तिम ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मक्का के काफ़िरों ने कई चीज़ों की माँग की, जिसका विवरण सूर: बनी इस्राईल ९० से ९३ तक में विद्यमान है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि किसी पैग़म्बर के अधिकार में यह नहीं

अल्लाह का आदेश आयेगा [1] सत्यता के साथ निर्णय कर दिया जायेगा[2] तथा उस स्थान पर असत्यवादी लोग हानि में रह जायेंगे।

(७९) अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए पशु पैदा किये[3] जिनमें से कुछ पर तुम सवार होते हो तथा कुछ को तुम खाते हो।[4]

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۷۹﴾

था कि वह अपनी जातियों की माँग पर कोई चमत्कार बनाकर दिखा सके। यह मात्र हमारे अधिकार में था। कुछ नबियों को तो आरम्भ ही से चमत्कार दिये गये थे। कुछ समुदायों को उनकी माँग पर चमत्कार दिखाया गया, कुछ को उनकी माँग पर भी नहीं दिखाया गया। हमारी इच्छानुसार उनका निर्णय होता था। किसी नबी के वश में यह नहीं था कि वह जब चाहे चमत्कार दिखा दे। इससे उन लोगों का खुला खंडन होता है जो कुछ औलिया (धर्मात्मा) की ओर यह बातें सबन्धित करते हैं कि वह जब चाहते तथा जैसे चाहते अद्भुत बातें तथा चमत्कार दिखा देते थे। जैसे शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के विषय में बताया जाता है। यह सब मनगढ़न्त किस्से, कहानियाँ हैं। जब अल्लाह ने पैग़म्बरों को यह अधिकार नहीं दिया, जिनको अपनी सत्यता के प्रमाण हेतु इसकी आवश्यकता भी थी तो किसी वली (धर्मात्मा) को यह अधिकार क्योंकर मिल सकता है ? विशेष रूप से जब कि वली को इसकी आवश्यकता भी नहीं है। चूँकि नबी की नबूअत (दूतत्व) के प्रति विश्वास करना (ईमान लाना) आवश्यक होता है, इसलिए चमत्कार उन की आवश्यकता थी। किन्तु अल्लाह की हिक्मत तथा इच्छा इसकी अभियाची न थी, इसलिए यह शक्ति किसी नबी को नहीं दी गई। वली के वली होने पर विश्वास रखना अनिवार्य नहीं। अत: उन्हें चमत्कार तथा विचित्र घटनाओं की ज़रूरत ही नहीं। अल्लाह तआला उन्हें यह अधिकार अनावश्यक क्यों दे सकता है ?

[1]अर्थात लोक व परलोक में जब उनकी यातना का निर्धारित समय आ जायेगा।

[2]अर्थात उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायेगा। सत्यवादियों को मोक्ष तथा मिथ्यावादियों को दण्ड।

[3]अल्लाह अपने असंख्य उपकारों में से कुछ की चर्चा कर रहा है। चौपाये (पशु) से अभिप्राय ऊँट, गाय, बकरी तथा भेड़ हैं। यह नर-मादा मिलकर आठ हैं, जैसा कि *सूर: अल-अन्आम* -१४३ तथा १४४ में है।

[4]यह सवारी के काम भी आते हैं। इनका दूध भी पिया जाता है, (जैसे बकरी, गायें तथा ऊँटनी का दूध)। इनका माँस इंसान का रूचिकार खाद्य है तथा बोझ लादने का काम भी उनसे लिया जाता है।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा अन्य भी तुम्हारे लिए उसमें बहुत से लाभ हैं[1] ताकि अपने हृदय में छिपी हुई आवश्यकताओं को उन्हीं पर सवारी करके तुम प्राप्त कर लो तथा इन पशुओं पर एवं नावों पर तुम सवार कराये जाते हो ।[2]

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा (अल्लाह) तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है,[3] तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को अस्वीकार करते रहोगे ।[4]

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण करके अपने से पूर्व के लोगों का परिणाम नहीं देखा,[5] जो इनसे संख्या में अधिक थे, शक्ति में कठोर तथा धरती में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं ।[6] (परन्तु) उनके किये कार्यों ने उन्हें तनिक भी लाभ नहीं पहुँचाया ।[7]

---

[1]जैसे इन सबके ऊन तथा बालों एवं खालों से कई वस्तुयें बनाई जाती हैं। इनके दूधों से घी, मक्खन, पनीर आदि भी बनती हैं।

[2]इनसे अभिप्राय बच्चे तथा महिलायें हैं, जिन्हें हौदज सहित ऊँट आदि पर सवार कर दिया जाता था।

[3]जो उसके सामर्थ्य तथा एकता का बोध कराती हैं तथा यह लक्षण विश्व ही में नहीं तुम्हारे अन्दर भी विद्यमान हैं।

[4]यह इतनी स्पष्ट, साधारण तथा अधिक हैं जिनका कोई निवर्ती इंकार करने का सामर्थ्य नहीं रखता। यह प्रश्न नकारत्मक है।

[5]अर्थात जिन समुदायों ने अल्लाह की अवज्ञा की तथा उसके रसूलों को झुठलाया, यह उनकी बस्तियों के अवशेष तथा खंडरो को तो देखें जो इनके क्षेत्रों ही में हैं कि उनका क्या दुष्परिणाम हुआ।

[6]अर्थात भवनों, उद्योगों तथा खेतियों के रूप में उनके अवशेष स्पष्ट करते हैं कि वह कलागढ़ी के क्षेत्र में भी तुमसे बढ़कर थे।

[7] فَمَا أَغْنَى में مَا प्रश्नवाची भी हो सकता है तथा नकारात्मक भी। नकारात्मक का भावार्थ तो अनुवाद से स्पष्ट है। प्रश्नवाची के आधार पर अभिप्राय यह होगा, उनको क्या

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ۝٨٣

(८३) तो जब कभी उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये तो यह अपने पास के ज्ञान पर इतराने लगे ।[1] अन्त में जिस वस्तु को उपहास में उड़ा रहे थे वहीं उन पर उलट पड़ी ।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝٨٤

(८४) फिर हमारी यातना देखते ही कहने लगे कि अल्लाह एक पर हम ईमान लाये तथा जिन-जिन को हम उसका साझीदार बना रहे थे, हमने उन सबसे इंकार किया ।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَأْسَنَا ۗ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٥

(८५) परन्तु हमारी यातना को देख लेने के पश्चात उनके ईमान ने उन्हें लाभ न दिया । अल्लाह ने अपना यही नियम निर्धारित कर रखा है जो उसके भक्तों में निरन्तर चला आ रहा है;[2] तथा उस स्थान पर काफ़िर ख़राब (तथा कमज़ोर) हुए ।[3]

लाभ पहुँचाया ? अभिप्राय वही है कि उनकी कमाई उनके कुछ काम नहीं आई ।

[1] عِلم (ज्ञान) से अभिप्राय उनके स्वयं कल्पित विचार, भ्रम तथा शंकायें एवं झूठे दावे हैं । उन्हें उपहास स्वरूप ज्ञान कहा गया है, क्योंकि वह उन्हें तर्क समझते थे । उनके विचारानुसार ऐसा कहा । अभिप्राय यह है कि अल्लाह तथा रसूल की बातों की तुलना में यह अपने काल्पनिक विचारों तथा भ्रमों पर इतराते तथा गर्व करते रहे । अथवा ज्ञान से अभिप्राय सांसारिक ज्ञान है । यह अल्लाह के आदेशों एवं अनिवार्यताओं के आगे इसी को महत्व देते हैं ।

[2] अर्थात यह अल्लाह का नियम चला आ रहा है कि प्रकोप देखने के बाद तौबा (पश्चाताप) तथा ईमान स्वीकार नहीं । यह विषय कुरआन के अनेक स्थानों में वर्णित हुआ है ।

[3] अर्थात प्रकोप दर्शन के पश्चात उन पर व्यक्त हो गया कि अब सिवाय दण्ड एवं विनाश के हमारे भाग्य में कुछ नहीं ।

सूरतु हा॰मीम॰अस्सजद:-४१

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ

सूर: हा॰मीम॰अस्सजद:* मक्का में अवतरित हुई तथा इनमें चौवन आयतें तथा छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰,

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ②

(२) अवतरित है अत्यन्त कृपालु अत्यन्त दयालु की ओर से।

---

*इस सूर: का दूसरा नाम "फ़ुस्सेलत" है। इसके अवतरित होने के विषय में बताया गया है कि एक बार कुरैश के प्रमुखों ने परस्पर परामर्श किया कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हमें उनको रोकने के लिए अवश्य कुछ करना चाहिए। उन्होंने सबसे अधिक भाषा शैली के व्यक्ति 'उतबा बिन रबीआ' का चुनाव किया ताकि वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बात करे। वह आप की सेवा में गया तथा आप पर अरबों में फूट तथा बिखराव पैदा करने का आरोप लगाकर प्रस्ताव रखा कि यदि इस नये आमंत्रण से आप का उद्देश्य धन-सम्पति प्राप्त करना हो तो वे हम एकत्रित किये देते हैं, नेतृत्व तथा प्रमुखता मनवाना चाहते हो तो हम आपको अपना प्रमुख तथा अगुवा मान लेते हैं, किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हैं तो एक नहीं ऐसी दस नारियों की व्यवस्था कर देते हैं तथा यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव है जिस के कारण आप हमारे देवताओं को बुरा कहते हैं, तो अपने व्यय (ख़र्च) पर आप का उपचार करा देते हैं। आपने उसकी सब बातें सुनकर इस सूर: का पाठ उसके सामने किया जिससे वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसने वापस जाकर कुरैश के प्रमुखों को बतलाया कि जो बात वह पेश करता है वह जादू, ज्योतिष, काव्य एवं कविता नहीं। अभिप्राय आप के आमंत्रण पर कुरैश के प्रमुखों को चिन्तन तथा मनन का आमंत्रण देना था। किन्तु वह सोच-विचार क्या करते ? उल्टा उतवा पर आरोप लगा दिया कि तू भी उसके जादू के प्रभाव में आ गया। यह वर्णन विभिन्न प्रकार से इतिहासकारों तथा भाष्यकारों ने वर्णित किया है। इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम शौकानी ने भी इन्हें अनुकृत किया है। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, "यह वर्णन इस बात को बताते हैं कि कुरैश की सभा अवश्य हुई। उन्होंने उतबा को वार्तालाप के लिए भेजा। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे इस सूर: का प्रारम्भिक भाग सुनाया।"

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾

(३) (ऐसी) किताब है जिसकी आयतों (सूत्रों) की स्पष्ट व्याख्या की गयी है [1] (इस अवस्था में कि) क़ुरआन अरबी भाषा में है[2] उस समुदाय के लिए जो जानता है।[3]

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۴﴾

(४) शुभसूचना सुनाने वाला तथा चेतावनी देने वाला है,[4] फिर भी उनके अधिकतर विमुख हो गये तथा वे सुनते ही नहीं।[5]

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿۵﴾

(५) तथा उन्होंने कहा कि तू जिसकी ओर हमें बुला रहा है हमारे हृदय तो उससे पर्दे में हैं,[6] हमारे कानों में बोझ है(अथवा को सुनायी नहीं देता[7]) तथा हममें और तुझमें एक पर्दा (आड़) है। अच्छा, तू अब अपना कार्य किये जा हम भी निस्संदेह कार्य करने वाले हैं।[8]

---

[1]अर्थात क्या हलाल (वैध) है तथा क्या हराम (अवैध) ? अथवा आज्ञापालन क्या है तथा अवज्ञा क्या ? अथवा पुण्य के कर्म कौन हैं तथा यातना के कौन ?

[2]यह अवस्था वाचक है। अर्थात उसके शब्द अरबी हैं, जिनके अर्थ विस्तृत एवं स्पष्ट हैं।

[3]अर्थात जो अरबी भाषा के अर्थ और वाक्य शैली को समझते हैं।

[4]ईमानवाले तथा सत्कर्मियों को शुभसूचना सुनाने वाला तथा मुशरेकीन एवं मिथ्यारोपण करने वाले को नरक की यातना से डराने वाला।

[5]अर्थात सोच-विचार तथा चिन्तन एवं बोध के उद्देश्य से नहीं सुनते कि जिससे लाभ हो। यही कारण है कि उनमें अधिकांश संमार्ग से वंचित

[6]اَكِنَّة (अकिन्नह) كِنَان (किनान) का बहुवचन है, पर्दा। अर्थात हमारे दिल इस बात से पर्दों में हैं कि हम तेरी तौहीद (अद्वैत) तथा ईमान के आमन्त्रण को समझ सकें।

[7]وَقْر (वक्र) का शाब्दिक अर्थ बोझ है। यहाँ अभिप्राय बहरापन है जो सत्य सुनने में बाधक था।

[8]अर्थात हमारे तथा तेरे बीच ऐसा पर्दा बाधक है कि तू जो कहता है वह सुन नहीं सकते तथा जो करता है उसे देख नहीं सकते। इसलिए तू हमें हमारी स्थिति पर छोड़ दे तथा हम तुझे तेरी अवस्था पर छोड़ दें। तू हमारे धर्म पर कर्म नहीं करता, हम तेरे धर्मानुसार कर्म नहीं कर सकते।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ﴿٦﴾

(६) (आप) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा मनुष्य हूँ, मुझ पर प्रकाशना की जाती है कि तुम सबका पूज्य केवल एक अल्लाह ही है [1] तो तुम उसकी ओर ध्यान केन्द्रित कर लो तथा उससे पापों की क्षमा चाहो, तथा उन मूर्तिपूजकों के लिए (बड़ी ही) ख़राबी है।

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٧﴾

(७) जो ज़कात नहीं देते [2] तथा आख़िरत को भी अस्वीकार करने वाले ही रहते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٨﴾

(८) नि:संदेह जो लोग ईमान लायें तथा अच्छे कर्म करें उनके लिए अनन्त बदला है।[3]

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾

(९) (आप) कह दीजिए कि क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो तथा तुम उसके साझीदार निर्धारित करते हो जिसने दो दिन में धरती को पैदा किया।[4] सर्वलोक का प्रभु

---

[1]अर्थात मेरे तथा तुम्हारे बीच कोई अंतर नहीं सिवाय ईश्वरीय प्रकाशना के, फिर यह दूरी तथा पर्दा क्यूं ? इसके अतिरिक्त जो एकेश्वरवाद की दावत (आमन्त्रण) दे रहा हूं, वह भी ऐसी नहीं कि समझ-बूझ में न आ सके, फिर उससे मुँह फेरना क्यों ?

[2]यह सूर: मक्का में अवतरित हुई। ज़कात (धर्मदान) हिजरत के दूसरे वर्ष अनिवार्य हुई। इसलिए इससे अभिप्राय या तो दान है जिसका आदेश मुसलमानों को मक्के में भी दिया जाता रहा, जिस प्रकार पहले मात्र प्रात: एवं संध्या की नमाज़ों का आदेश था, पुन: हिजरत से डेढ़ वर्ष पूर्व मेराज की रात्रि को पाँच अनिवार्य नमाज़ों का आदेश हुआ। अथवा ज़कात से यहाँ तात्पर्य कलमए शहादत है जिससे मानव मन शिर्क (मिश्रणवाद) की गन्दगियों से पवित्र हो जाता है। (इब्ने कसीर)

[3] أجرٌ غيرُ ممنون का वही भावार्थ है जो (عطاءً غيرَ مجذوذ -हूद, १०८) का है, अर्थात अन्त न होने वाला बदला।

[4]पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है कि अल्लाह ने आसमानों तथा धरती को छ: दिन में पैदा किया। यहाँ उसका कुछ विवरण दिया गया है। फ़रमाया, 'धरती को दो दिन में बनाया' इससे अभिप्राय हैं يومُ الأحد (रविवार) तथा يوم الاثنين (सोम)। सूर: *नाज़िआत* में कहा गया है ﴿وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا﴾ जिससे प्रत्यक्ष रूप से

वही है।

(१०) तथा उसने धरती में उसके ऊपर से ही पर्वत उत्पन्न कर दिये,[1] उसमें समृद्धि प्रदान कर दी[2] तथा उस में रहने वालों के आहार का भी निर्धारण उसी में कर दिया[3] केवल चार दिन में ही,[4] प्रश्न करने वालों के

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ⑩

ज्ञात होता है कि धरती को आकाश के बाद बनाया गया, जबकि यहाँ धरती की पैदाईश की चर्चा आसमान की पैदाईश से पहले की गई। आदरणीय इब्ने अब्बास ने इसकी व्याख्या इस प्रकार फ़रमायी है कि उत्पत्ति और वस्तु है तथा دحو (बिछाना अथवा फैलाना) अलग चीज़ है जैसे कि पहले भी व्यान (वर्णन) किया गया है। तथा دحى (दहा) का अभिप्राय है कि धरती को आवास योग्य बनाने के लिए उसमें जल के भंडार रखे गये। उसे उपज की आवश्यकता का कोष बनाया गया। ﴿أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا﴾ उसमें पर्वत, टीले तथा पाषाण रखे गये। यह काम आकाश की रचना के बाद दूसरे दो दिनों में किया गया। इस प्रकार धरती तथा उससे संम्बन्धित चीज़ों की रचना चार दिनों में पूरी हुई। (सहीह बुख़ारी, व्याख्या *हा॰मीम॰ अस्सजदा*)

[1]अर्थात पर्वतों को धरती ही से पैदा करके उनके ऊपर गाड़ दिया ताकि धरती इधर-उधर न डोले।

[2]यह संकेत है पानी की अधिकता, अनेक प्रकार की जीविका, खनिज पदार्थ एवं अन्य इसी प्रकार की वस्तुओं की ओर। यह धरती की समृद्धि है भलाई की प्रचुरता का नाम ही समृद्धि (बरकत) है।

[3] أقوات (अक़्वात) قوتٌ कूत (आहार, खाद्य) का बहुवचन है। अर्थात धरती की सभी बसने वाली सृष्टि का आहार उसमें रख दिया अथवा उसकी व्यवस्था कर दी। अल्लाह की इस योजना तथा व्यवस्था का काम इतना विस्तृत है कि कोई ज़ुबान उसका वर्णन नहीं कर सकती, कोई कलम उसे लिख नहीं सकता कोई कलकूलेटर उसे गिन नहीं सकता। कुछ ने इसका अभिप्राय यह लिया है कि प्रत्येक भूभाग में ऐसी वस्तुऐं पैदा कर दीं जो दूसरे भूभाग में नहीं उपज सकतीं ताकि प्रत्येक क्षेत्र की यह विशेष उपज उन क्षेत्रों का व्यवपार तथा जीविका का आधार बन जायें। यह भावार्थ भी अपने स्थान पर सही तथा बिल्कुल यथार्थ है।

[4]अर्थात उत्पत्ति के पूर्व दो दिन तथा धरती फैलाने के पश्चात दो दिन, यह सब मिला के चार दिन हुए जिनमें यह सभी कार्य पूरा हुआ।

लिये समान रूप से ।[1]

ثُمَّ اسْتَوَىٰٓ إِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَآ أَتَيْنَا طَآئِعِينَ ⑪

(११) फिर आकाश की ओर उच्चय हुआ तथा वह धुँआ (सा) था, तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो यह न चाहो [2] दोनों ने निवेदन किया कि हम स्वेच्छा पूर्ण उपस्थित हैं।

فَقَضَىٰهُنَّ سَبْعَ سَمَٰوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَآءٍ أَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَٰبِيحَ وَحِفْظًا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ⑫

(१२) तोदो दिन में सात आकाश बना दिये, प्रत्येक आकाश में उसके अनुसार आदेश की प्रकाशना भेज दी[3] तथा हमने संसारीय आकाश को तारों से सुशोभित किया तथा रक्षा की ।[4] यह योजना अल्लाह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञाता की है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَٰعِقَةً مِّثْلَ صَٰعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ⑬

(१३) अब भी ये विमुख हों तो कह दीजिए कि मैं तुम्हें उस तड़ित (आकाशीय प्रकोप) से डरा देता हूँ जो आद समुदाय एवं समूद समुदाय के तड़ित के समान होगा ।[5]

---

[1] سَوَآءً (सवाअ) का अर्थ है पूरे चार दिन में, अर्थात प्रश्न करने वालों को बता दो कि रचना तथा विस्तार का काम चार दिन में हुआ अथवा पूरा अथवा बराबर उत्तर है प्रश्न-कर्ताओं के लिए।

[2] यह आना किस प्रकार था इसकी स्थिति नहीं बताई जा सकती ? यह दोनों अल्लाह के पास आये जैसे उसने चाहा। कुछ ने इसका भावार्थ लिया है कि मेरे आदेश का पालन करो । उन्होंने कहा, ठीक है हम उपस्थित हैं। अल्लाह ने आकाश को आदेश किया कि सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारे निकाल दे तथा पृथ्वी से कहा कि स्रोत प्रवाहित कर दे एवं फल उगा दे। (इब्ने कसीर) अथवा भावार्थ है कि तुम दोनों अस्तित्व में आ जाओ।

[3] अर्थात स्वयं आकाशों को अथवा उनमें आबाद फ़रिश्तों को विशेष कार्यों तथा स्मरण एवं महिमागान के लिए प्रतिबद्ध कर दिया।

[4] अर्थात शैतान से सुरक्षा, जैसाकि अन्य स्थान पर व्याख्या है। तारों का एक तीसरा उद्देश्य दूसरे स्थान पर اهتداء (रास्ते का पता लगाना) भी वर्णन किया गया है। (*अन्नहल-१६*)

[5] अर्थात चूँकि तुम हमारे ही समान मनुष्य हो, इसलिए हम तुम्हें ईशदूत (नबी) नहीं मान सकते। अल्लाह को नबी भेजना होता तो फ़रिश्तों को भेजता न कि मानव को।

(१४) उनके पास जब उनके आगे-पीछे से पैग़म्बर आये कि तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करो, तो उन्होने उत्तर दिया कि यदि हमारा प्रभु चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता; हम तो तेरी रिसालत को पूर्णरूप से अस्वीकार करते हैं।

إِذْ جَآءَتْهُمُ ٱلرُّسُلُ مِنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ قَالُوا۟ لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَٰٓئِكَةً فَإِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ⑭

(१५) तो जब आद ने अकारण धरती पर अहंकार प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि हम से शक्तिशाली कौन है [1] क्या उन्हें यह नहीं दिखायी दिया कि जिसने उन्हें पैदा किया वह उनसे सर्वशक्तिशाली है।[2] वे (अन्त तक) हमारी आयतों[3] का इंकार ही करते रहे।

فَأَمَّا عَادٌ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَقَالُوا۟ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا يَجْحَدُونَ ⑮

(१६) अन्त में हमने उन पर एक तीव्रगति वाली आँधी[4] अशुभ दिनों में [5] भेज दी कि उन्हें

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِىٓ أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ

---

[1]इस वाक्य खंड से उनका अभिप्राय यह था कि वह यातना रोक लेने पर समर्थ हैं क्योंकि वे लम्बे क़द तथा अति बलवान थे। यह उन्होंने उस समय कहा जब उनके पैग़म्बर आदरणीय हूद (अलैहिस्सलाम) ने उनको सावधानी तथा चेतावनी के लिये अल्लाह के प्रकोप से डराया।

[2]अर्थात क्या वह अल्लाह से भी अधिक बलवान हैं, जिसने उन्हें पैदा किया तथा उन्हें शक्ति तथा बल दिया ? क्या उनको रचने के पश्चात उसकी शक्ति तथा बल समाप्त हो गया ? यह प्रश्न इंकार तथा फटकार के लिये है।

[3]उन चमत्कारों का जो अम्बिया को हमने प्रदान किये थे, अथवा उन प्रमाणों का जो अम्बिया के साथ उतारे गये थे अथवा उन उत्पत्ति के लक्षणों का जो विश्व में फैले हुए हैं तथा बिखरे हुए हैं।

[4] صَرْصَر यह صَرَّةٌ से बना है जिसका अर्थ आवाज़ है, अर्थात ऐसी वायु जिसमें तीव्र ध्वनि थी 1 अर्थात अति तीव्र तथा प्रचंड वायु जिसमें ध्वनि भी होती है। कुछ कहते हैं कि यह صر से है, जिसका अर्थ 'शीत' है। अर्थात ऐसी पालेवाली वायु जो अग्नि के समान जला डालती है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं وَالحَقّ أنها مُتَصِفَةٌ بِجميع ذلك "सत्य यह है कि उस वायु में यह सभी गुण थे।"

[5] نَّحِسَاتٌ का अनुवाद कुछ ने निरन्तर किया है क्योंकि यह वायु सात रातें तथा आठ दिन तक निरन्तर चलती रही। कुछ ने प्रचण्ड, कुछ ने धूल-धप्पड़ वाली तथा कुछ ने अशुभ

عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزٰى ۖ وَهُمْ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٦﴾

सांसारिक जीवन में अपमान वाले प्रकोप का स्वाद चखा दें। (विश्वास करो) कि आखिरत की यातना इससे अत्याधिक अपमान वाली है तथा वे सहायता नहीं किये जायेंगे।

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَأَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रहे समूद, तो हमने उनका भी मार्गदर्शन किया[1] फिर भी उन्होंने मार्गदर्शन पर अंधेपन को महत्व दिया,[2] जिसके कारण उन्हें (पूर्णरूप से) अपमान की यातना की कड़क ने उनके कुकर्मों के कारण पकड़ लिया।[3]

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा ईमानदार और संयमियों को हमने (बाल-बाल) बचा लिया।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللّٰهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिस दिन[4] अल्लाह के शत्रु नरक की ओर लाये जायेंगे तथा उन (सब) को एकत्रित कर दिया जायेगा।[5]

किया है। अन्तिम अनुवाद का अभिप्राय यह होगा कि यह दिन जिनमें उन पर कड़ी हवा की आंधी आयी, उनके लिए अति अशुभ सिद्ध हुए। यह नहीं कि दिन ही सामान्यत: अशुभ हैं।

[1]अर्थात उनको तौहीद (अद्वैत) की दावत दी, उसके तर्क उनके सामने स्पष्ट किये तथा उनके पैग़म्बर (संदेशवाहक) स्वालेह (अलैहिस्सलाम) द्वारा उन पर तर्क की पूर्ति की।

[2]अर्थात उन्होंने विरोध तथा झुठलाने का काम किया यहां तक कि उस ऊँटनी को बध कर डाला जो चमत्कार स्वरूप उनकी इच्छा पर चट्टान से प्रकट की गई थी तथा पैग़म्बर की सच्चाई का प्रमाण थी।

[3] صاعِقَة (साइक:) कठिन प्रकोप को कहते हैं। यह कड़ा प्रकोप उन पर चिंघाड़ तथा भूकम्प के रूप में आया, जिसने अपमान तथा हिनाई के साथ उन्हें सत्यानाश कर दिया।

[4]यहां اذكر लुप्त है। अर्थात वह समय याद करो जब अल्लाह के विरोधयों को फ़रिश्ते एकत्रित करेंगे अर्थात आदि से अन्त तक के विरोधियों का जमाव होगा।

[5] أي : يُحبَسُ أولهم على آخرهم لِيُلاحِقوا अर्थात "उनको रोक-रोककर उनके आदि तथा अन्त को परस्पर एकत्र किया जायेगा।" (फ़तहुल क़दीर) इस शब्द की अधिक व्याख्या के लिए देखिए *सूर: अन्नमल* आयत नं॰ १७ का भाष्य।

(२०) यहाँ तक कि जब नरक के अति निकट आ जायेंगे उन पर उनके कान तथा उनकी आँखें एवं उनकी खालें उनके कर्मों की गवाही देंगे ।[1]

حَتَّىٰٓ إِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَٰرُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

(२१) तथा ये अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरूद्ध गवाही क्यों दी।[2] वह उत्तर देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी जिसने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की है, उसी नें प्रथम बार तुम्हें पैदा किया तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे ।[3]

وَقَالُوا۟ لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوٓا۟ أَنطَقَنَا ٱللَّهُ ٱلَّذِىٓ أَنطَقَ كُلَّ شَىْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾

---

[1]अर्थात जब वह शिर्क करने को नकार देंगे तो अल्लाह उनके मुखों पर मुहर लगा देगा तथा उनके अंग गवाही देंगे कि यह अमुक-अमुक कार्य करते रहे। ﴿إِذَا مَا جَآءُوهَا﴾ में مَا अधिक है बल देने के लिए। इंसान के भीतर पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं। उनमें से यहाँ दो का वर्णन है। तीसरी खाल है जो स्पर्श अथवा छूने का साधन है। इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों के तीन प्रकार हो गये। शेष दो ज्ञान इन्द्रियों की चर्चा नहीं की कि 'चखना' कई प्रकार से स्पर्श में सम्मिलित है, क्योंकि यह चखना उस समय तक संभव नहीं जब तक उस वस्तु को ज़बान पर न रखा जाये। इसी प्रकार 'सूँघना' उस समय तक संभव नहीं जब तक वह वस्तु नाक की त्वचा से स्पर्श न करे। इस प्रकार جلود (खालें) शब्द में तीन ज्ञान इंद्रियाँ आ जाती हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जब मुशरेकीन और काफ़िर देखेंगे कि खुद उनके शरीर के समस्त अंग उनके विपरीत गवाही दे रहे हैं तो वे आश्चर्य से अथवा यातना के तौर पर और क्रोध में उनसे कहेंगे।

[3]कुछ के विचार में وَهُوَ से अल्लाह का कथन तात्पर्य है। इस आधार पर यह नया तथा अलग वाक्य है, तथा कुछ के विचार में इंसानी खालों का ही। इस आधार पर यह उन्ही के वाक्य का पूरक कथन है। क़यामत के दिन अंगों के गवाही देने का वर्णन गुज़र चुका है तथा सही हदीसों में भी इसे वर्णित किया गया है। उदाहरणार्थ जब अल्लाह की आज्ञा से मानवीय अंग बोलकर बतलायेंगे, तो बंदा कहेगा, «بُعْدًا لَكُنَّ وَسُحْقًا، فَعَنْكُنَّ كُنْتُ أُنَاضِلُ». "तुम्हारे लिये विनाश तथा दूरी हो। मैं तो तुम्हारे पक्ष ही में झगड़ रहा था तथा सुरक्षा कर रहा था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़ुहद) इसी हदीस में यह भी वर्णन हुआ है कि बंदा

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुम (अपने कुकर्म) इस कारण छिपा कर रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँखें एवं तुम्हारी खालें गवाही देंगी[1] तथा तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उसमें से बहुत से कर्मों से अल्लाह अंजान है ।[2]

وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा तुम्हारे इसी कुविचार ने जो तुमने अपने प्रभु के विषय में कर रखे थे, तुम्हें नाश कर दिया[3] तथा अन्त में तुम हानि उठाने वालों में से हो गये ।

कहेगा कि मैं अपने मन के सिवा किसी की गवाही न मानूँगा । अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि क्या मैं तथा मेरे फ़रिश्ते कर्म-लेखक गवाही के लिए पर्याप्त नहीं । फिर उनके मुख पर मुहर लगा दी जायेगी तथा उनके अंगों को बोलने का आदेश दिया जायेगा ।

[1]इसका अभिप्राय है कि तुम पाप का कर्म करते हुए तो लोगों से छुपने का प्रयास करते थे किन्तु तुम्हें इसका कोई भय नहीं था कि तुम्हारे विरूद्ध स्वयं तुम्हारे अंग भी गवाही देंगे कि जिनसे छुपने की आवश्यकता का आभास करते । इसका कारण उनका पुर्नजीवन से इंकार तथा अविश्वास था ।

[2]इसलिए तुम अल्लाह की सीमा लाँघने तथा उसकी अवज्ञा में निर्भीक थे ।

[3]अर्थात तुम्हारी इस दुरास्था एवं अनृत भ्रम ने कि अल्लाह को हमारे बहुत से कर्मों का ज्ञान नहीं होता, तुम्हें विनाश में डाल दिया, इसलिए कि इसके कारण तुम प्रत्येक प्रकार का पाप करने में बहादुर तथा निर्भीक हो गये थे । इसके अवतरण के कारण के संबंध में एक हदीस है । माननीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि "*ख़ानये काबा*" के पास दो कुरैशी तथा एक सक़फी अथवा दो सक़फी तथा एक कुरैशी एकत्र हुए, भारी शरीर एवं कम समझ वाले । इनमें से एक ने कहा, "क्या तुम समझते हो, हमारी बातें अल्लाह सुनता है ?" दूसरे ने कहा, हमारी खुली बातें सुनता है तथा गुप्त बातें नहीं सुनता । एक अन्य ने कहा, "यदि वह हमारी खुली बातें सुनता है तो हमारी गुप्त बातें भी अवश्य सुनता है" जिस पर अल्लाह ने आयत ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ﴾ अवतरित की (सहीह बुख़ारी, व्याख्या *सूरह हा॰मीम॰अस्सजदा*)

فَإِن يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِن يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُم مِّنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) अब यदि ये धैर्य रखें तो भी उनका ठिकाना नरक ही है तथा यदि ये क्षमायाचना भी करना चाहें तो भी क्षमा नहीं किये जायेंगे ।[1]

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُم مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा हमने उनके कुछ सहभागी निर्धारित कर रखे थे जिन्होंने उनके अगले-पिछले कर्मों को उनकी दृष्टि में आकर्षक बना रखे थे ।[2] तथा उनके पक्ष में भी अल्लाह का वचन उन सम्प्रदायों के साथ पूर्ण हुआ जो उनसे पूर्व जिन्नों तथा मनुष्यों के गुजर चुके है । निःसंदेह वे हानि उठाने वाले सिद्ध हुए ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ

(२६) तथा काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत[3] (उनके पाठ करने के समय) तथा बेहूदा बातें करो,[4] क्या विचित्र कि तुम

---

[1]एक अन्य अर्थ इसका यह किया गया है कि वह मनाना चाहेंगे (عتبى प्रसन्नता की माँग करेंगे) ताकि वह स्वर्ग में चले जायें तो यह चीज़ उन्हें कभी सुलभ नहीं होगी (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा फ़तहुल क़दीर) कुछ ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि वह दुनिया में फिर भेजे जाने की कामना करेंगे जो अंगीकार नहीं की जायेगी । (इब्ने जरीर तबरी) अभिप्राय यह है कि उनका नित्य का आवास नरक होगा इस पर धैर्य करें (तब भी दया नहीं की जायेगी जैसाकि दुनिया में कभी धैर्यवानों पर तरस आ जाता है) अथवा किसी भी प्रकार वहाँ से निकलने का प्रयास करें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी ।

[2]इनसे तात्पर्य वह शैतान, मनुष्य एवं जिन्न हैं जो असत्य पर दुराग्रह करने वालों के संग लग जाते हैं, जो उन्हें कुफ़्र तथा पापों को शोभनीय बनाकर दिखाते हैं । तो वह इस कुपथ की दलदल में फंसे रहते हैं यहाँ तक कि उनकी मौत आ जाती है तथा वह सदा की क्षति के पात्र बन जाते हैं ।

[3]यह उन्होंने परस्पर कहा । कुछ ने لا تسمعوا का अर्थ किया है कि उसका अनुसरण न करो ।

[4]अर्थात शोर करो, तालियाँ, सीटियाँ बजाओ, चिल्ला-चिल्ला कर बातें करो ताकि उपस्थित लोगों के कानों में क़ुरआन की आवाज़ न जाये तथा उनके दिल क़ुरआन की शैली तथा गुणों से प्रभावित न हों ।

لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾

प्रभावशाली हो जाओ ।[1]

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तो निःसंदेह हम उन काफ़िरों को कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे तथा उन्हें उन के अति बुरे कर्मों का बदला (अवश्य) देगें ।[2]

ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) अल्लाह के शत्रुओं का बदला (दण्ड) यही नरक की अग्नि है, जिसमें उनका स्थाई निवास है, (यह) बदला है हमारी आयतों को अस्वीकार करने का ।[3]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा काफ़िर लोग कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें जिन्नों तथा मनुष्यों के उन (दोनों पक्षों) को दिखा, जिन्होंने हमें भटकाया[4] (ताकि) हम उनको अपने पैरों के नीचे डाल

---

[1]अर्थात संभव है कि इस प्रकार शोर मचाने के कारण से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ुरआन का पाठ ही न करें जिसे सुनकर लोग प्रभावित होते हैं ।

[2]अर्थात उनके कुछ सत्कर्मों का कोई मूल्य नहीं होगा, जैसे अतिथि-सत्कार, संवन्धियों के साथ सद्भाव इत्यादि क्योंकि वह ईमान के धन से वंचित रहे । हाँ, कुकर्मों का प्रतिकार उन्हें अवश्य मिलेगा जिनमें पवित्र क़ुरआन से रोकने का अपराध भी है ।

[3]आयतों से तात्पर्य जैसाकि पहले भी वताया गया है कि वह खुले प्रमाण तथा तर्क हैं जो अल्लाह तआला अम्बिया (ईशदूतों) पर उतारता है, अथवा वह चमत्कार हैं जो उनको प्रदान किये जाते हैं, अथवा उत्पत्ति के वे प्रमाण हैं जो विश्व तथा प्राणियों में फैले हुए हैं । काफ़िर इन सब ही का इंकार करते हैं जिसके कारण वह ईमान से वंचित रहते हैं ।

[4]इसका भावार्थ स्पष्ट है कि पथभ्रष्ट करने वाले शैतान ही नहीं होते, इंसानों की एक वड़ी संख्या भी शैतान के प्रभाव के अधीन लोगों को वहकाने में तत्पर रहती है । फिर भी कुछ ने जिन्न से इवलीस तथा इंसान से क़ाबील तात्पर्य लिया है, जिसने इंसानों में सबसे पहले अपने भाई हाबील को वध करके अत्याचार तथा महापाप किया तथा हदीसानुसार क़यामत तक होने वाले सभी अवैध संहारों के पाप का एक भाग उसको मिलता रहेगा । हमारे विचार से पहला भावार्थ अधिक सही है ।

दें ताकि वे अत्यन्त नीचे (कठोर यातना में) हो जायें ।[1]

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝

(३०) वास्तव में जिन लोगों ने कहा कि हमारा प्रभु अल्लाह है[2] फिर उसी पर दृढ़ रहे,[3] उनके पास फ़रिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं[4] कि तुम कुछ भी भयभीत तथा दुखी न हो[5] (बल्कि) उस स्वर्ग की शुभसूचना सुन लो

---

[1]अर्थात अपने पगों से उन्हें रौंदें तथा इस प्रकार हम उन्हें भी अपमानित तथा निरादर करें । नरकवासियों को अपने नेताओं पर जो क्रोध होगा उसकी संतुष्टि के लिए वह कहेंगे । अन्यथा दोनों ही अपराधी हैं तथा दोनों ही एक जैसा नरक का दण्ड भोगेंगे । जैसे दूसरे स्थान पर अल्लाह ने फ़रमााया ﴿لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ﴾ (अल-आराफ़-३८) नरकवासियों की चर्चा के पश्चात अल्लाह तआला स्वर्गवासियों की चर्चा कर रहा है, जैसाकि साधारणत: क़ुरआन की शैली है ताकि चेतावनी के साथ प्रोत्साहन तथा प्रोत्साहन के साथ चेतावनी का भी प्रबन्ध रहे, मानो डराने के पश्चात शुभसूचना ।

[2]अर्थात एक अल्लाह बिना साझी का, पालनहार भी वही तथा पूज्य भी वही । यह नहीं कि पालनहार होने का तो स्वीकार परन्तु उपास्य (पूज्य होनें में) दूसरों को भी साझी बनाया जा रहा है ।

[3]अर्थात कठिन से कठिन स्थिति में भी ईमान पर स्थिर रहे, उससे फिरे नहीं । कुछ ने स्थिरता का अर्थ विशुद्धता लिया है, अर्थात मात्र एक अल्लाह ही की इबादत तथा आज्ञापालन किया । जिस प्रकार हदीस में आता है कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा । "मुझे ऐसी बात बतला दें कि आप के पश्चात मुझे किसी से प्रश्न करने की आवश्यकता न हो ।" आपने फ़रमाया,

«قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ».

"कह, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इस पर अडिग रह ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जामिअे औसाफिल इस्लाम)

[4]अर्थात मृत्यु के समय । कुछ कहते हैं कि फ़रिश्ते यह शुभसूचना तीन स्थानों पर देते हैं मृत्यु के समय, क़ब्र में तथा क़ब्र से पुन: उठने के समय ।

[5]अर्थात परलोक में आगामी स्थितियों की चिन्ता तथा संसार में धन-संतान के त्याग का शोक न करो ।

जिसका तुम्हें वचन दिया गया है ।[1]

نَحۡنُ أَوۡلِيَآؤُكُمۡ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِۖ وَلَكُمۡ فِيهَا مَا تَشۡتَهِيٓ أَنفُسُكُمۡ وَلَكُمۡ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ٣١

(३१) तुम्हारे साँसारिक जीवन में भी हम तुम्हारे शुभचिन्तक थे तथा आख़िरत में भी रहेंगे, [2] जिस वस्तु को तुम्हारा मन चाहे तथा जो कुछ माँगो सब तुम्हारे लिये [स्वर्ग में विद्यमान (उपस्थित)] है ।

نُزُلٗا مِّنۡ غَفُورٖ رَّحِيمٖ ٣٢

(३२) अत्यन्त क्षमा करने वाला अत्यन्त कृपालु की ओर से ये सब कुछ अतिथि सत्कार के रूप में है ।

وَمَنۡ أَحۡسَنُ قَوۡلٗا مِّمَّن دَعَآ إِلَى ٱللَّهِ وَعَمِلَ صَٰلِحٗا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ ٱلۡمُسۡلِمِينَ ٣٣

(३३) तथा उससे अधिक अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये, पुण्य के कार्य करे तथा कहे कि मैं निश्चित रूप से मुसलमानों में से हूँ ।[3]

وَلَا تَسۡتَوِي ٱلۡحَسَنَةُ وَلَا ٱلسَّيِّئَةُۚ ٱدۡفَعۡ بِٱلَّتِي هِيَ أَحۡسَنُ فَإِذَا ٱلَّذِي بَيۡنَكَ وَبَيۡنَهُۥ عَدَٰوَةٞ كَأَنَّهُۥ وَلِيٌّ حَمِيمٞ ٣٤

(३४) पुण्य तथा पाप समान नहीं होते, [4] बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिसके और तुम्हारे बीच शत्रुता है ऐसा हो जायेगा जैसे हार्दिक मित्र ।[5]

---

[1]अर्थात दुनिया में जिसका वचन तुम्हें दिया गया था ।

[2]यह अधिक शुभसूचना है, यह अल्लाह तआला का कथन है । कुछ के विचार में यह फ़रिश्तों का कथन है । दोनों ही रूपों में यह ईमानदार के लिए महान शुभसूचना है ।

[3]अर्थात लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने के साथ-साथ स्वयं भी संमार्ग प्राप्त धर्म का अनुपालक तथा अल्लाह का आज्ञाकारी हो ।

[4]वल्कि उनमें महान अंतर है ।

[5]यह एक वहुत ही महत्वपूर्ण नैतिक निर्देश है कि बुराई को अच्छाई के साथ टालो, अर्थात अपकार का वदला उपकार के साथ, अत्याचार का क्षमा से, क्रोध का धैर्य से तथा अप्रिय वातों का सहनशीलता से दिया जाये । इसका प्रभाव यह होगा कि तुम्हारा शत्रु

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा यह बात उन्हीं के सौभाग्य में होती है जो धैर्य रखें;[1] तथा उसे अति सौभाग्यशाली के अतिरिक्त कोई नहीं प्राप्त कर सकता ।[2]

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा यदि शैतान की ओर से कोई शंका उत्पन्न हो जाये तो अल्लाह की शरण चाहो ।[3] नि:संदेह वह अति सुनने वाला जानने वाला है ।[4]

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا

(३७) तथा दिन-रात एवं सूर्य तथा चन्द्रमा भी उसी की निशानियों में से हैं,[5] तुम सूर्य

मित्र वन जायेगा, दूरस्थ समीपस्थ तथा रक्त का प्यासा तुम्हारे मोहित तथा जान निछावर करने वाला हो जायेगा ।

[1]अर्थात बुराई को भलाई से टालने का गुण यद्यपि अति लाभप्रद तथा बड़ा सफल है, किन्तु इसके अनुसार कर्म वही कर सकेंगे जो धैर्यवान होंगे, क्रोध को पी जाने वाले तथा अप्रिय वातों को सहन करने वाले ।

[2] حَظٌّ عَظِيْم (बड़ा सौभाग्य) से अभिप्राय स्वर्ग है, अर्थात उपरोक्त गुण उनको प्राप्त होते हैं जो वड़े भाग्यशाली होते हैं । अर्थात स्वर्गीय, जिनका स्वर्ग में जाना लिख दिया गया हो ।

[3]अर्थात शैतान धर्म-विधान के कर्म से फेरना चाहे अथवा उत्तम ढ़ंग से बुराई के टालने में वाधा डाले तो उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह की शरण माँगो ।

[4]तथा जो ऐसा हो अर्थात प्रत्येक की सुनने तथा प्रत्येक बात को जानने वाला, वही शरण माँगने वालों को शरण दे सकता है । यह पूर्व का कारण बताया गया है । इस के पश्चात अव फिर कुछ निशानियों की चर्चा की जा रही है जो अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य, उसकी एकता (तौहीद) तथा उसकी आधिकारिक शक्ति को व्यक्त कर रही है ।

[5]अर्थात रात को अंधेरी बनाना ताकि लोग उसमें विश्राम कर सकें । दिन को प्रकाशित वनाना ताकि जीविका उपार्जन में उलझन न हो । फिर एक के बाद दूसरे का आना-जाना तथा कभी रात का लम्वा तथा दिन का छोटा होना, कभी इसके विपरीत होना इसी प्रकार सूर्य तथा चांद का अपने-अपने समय से निकलना एवं डूबना तथा अपने अक्ष पर अपनी मंजिलें तय करना इस वात का प्रमाण है कि उनका निश्चय कोई रचयिता तथा स्वामी है । तथा वह एक एवं केवल एक है तथा विश्व में उसी का अधिकार एवं आदेश

لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

तथा चन्द्रमा के समक्ष शीश न झुकाओ[1] बल्कि शीश उस अल्लाह के समक्ष झुकाओ जिसने उन सबको पैदा किया है[2] यदि तुम्हें उसी की इबादत करनी है।

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٨﴾ السجدة

(३८) फिर भी यदि वे अहंकार करें तो वे (फ़रिश्ते) जो आपके प्रभु के निकट हैं, वे तो रात-दिन उसकी महिमा का वर्णन करते हैं तथा (किसी समय भी) नहीं थकते।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۚ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी दबायी (शुष्क) देखता है,[3] फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह तरो-ताजा होकर उभरने लगती है।[4] जिसने उसे जीवित कर दिया वही निश्चित रूप से मृत को भी जीवित करने

चलता है। यदि व्यवस्थापक तथा प्रबंधक एक से अधिक होते तो विश्व का यह संचालन ऐसे सुदृढ़ तथा लगे-बंधे ढंग से नहीं चल सकता था।

[1] इसलिए कि यह भी तुम्हारी भाँति अल्लाह की सृष्टि हैं, ईश्वरीय गुणों से युक्त अथवा उसमें साझी नहीं हैं।

[2] خَلَقَهُنَّ में सर्वनाम बहुवचन स्त्रीलिंग इसलिए आया है कि यह या तो خَلَقَ هٰذِهِ الأربعة المذكورة के भावार्थ में है, क्योंकि नपुंसक के बहुवचन का नियम स्त्रीलिंग बहुवचन ही का है, अथवा वह केवल شمس و قمر की ओर फिर रहा है। कुछ व्याकरण विशेषज्ञों के निकट द्विवचन भी बहुवचन है अथवा फिर अभिप्राय अल-आयात (الآيات) है जो स्त्रीलिंग बहुवचन है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] خَاشِعَةً का अभिप्राय शुष्क तथा अकालग्रस्त अर्थात मृत है।

[4] अर्थात विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट फल तथा अन्न उपजाती है।

वाला है ।[1] नि:संदेह वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है ।

(४०) नि:संदेह जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन करते हैं[2] वह (कुछ) हम से छिपे नहीं[3] (बताओ तो) जो अग्नि में डाला जाये वह अच्छा है अथवा वह जो शान्तिपूर्वक क़यामत के दिन आये ?[4] तुम जो चाहो करते जाओ; वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है ।[5]

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَآ ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِى ٱلنَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِىٓ ءَامِنًا يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ ٱعْمَلُوا۟ مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُۥ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

(४१) जिन लोगों ने अपने पास पवित्र क़ुरआन पहुँच जाने के उपरान्त उससे कुफ़्र किया (वह भी हमसे छिपे नहीं),[6] यह अत्यन्त

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِٱلذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُۥ لَكِتَٰبٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

---

[1]मृत भूमि को वर्षा द्वारा इस प्रकार जीवन प्रदान कर देना तथा उससे उपज के योग्य बनाना इस बात का प्रमाण है कि वह मुर्दों को भी निश्चय जीवित करेगा ।

[2]अर्थात उसको मानते नहीं बल्कि उससे मुख फेरते तथा झुठलाते हैं । आदरणीय इब्ने अब्बास ने إلحاد (इल्हाद) का अर्थ किया है وضع الكلام على غير مواضعه इस आधार पर इसमें वह असत्य गिरोह भी आ जाते हैं जो अपने असत्य विश्वास एवं सिद्धान्त की सिद्धि के लिए अल्लाह की आयतों के अर्थ में परिवर्तन करते तथा धोखे-धड़ी से काम लेते हैं ।

[3]यह नास्तिकों के लिए कड़ी चेतावनी है चाहे वह किसी प्रकार के हों ।

[4]अर्थात क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं ? नहीं, वस्तुत: नहीं । इसके अतिरिक्त इससे संकेत कर दिया कि (मुलहिदीन) नास्तिक आग में डाले जायेंगे तथा ईमान वाले क़यामत (प्रलय) के दिन निर्भय रहेंगे ।

[5]यह आदेश सूचक शब्द है, किन्तु यहाँ उससे अभिप्राय धमकी तथा चेतावनी देना है । कुफ़्र एवं शिर्क तथा पाप के लिये अनुमति तथा औचित्य नहीं ।

[6]कोष्ठ के शब्द إنّ (इन्न) के लुप्त विधेय अनुवाद है । कुछ कहते हैं कि कुछ और शब्द लुप्त हैं, उदाहरणार्थ يُجازون بكفرهم (उन्हें उनके कुफ़्र का दण्ड दिया जायेगा) अथवा هالكون (वह नाश होने वाले हैं) अथवा يُعَذَّبُونَ (वह यातना दिये जायेंगे) ।

महान (सम्मानित) किताब है ।[1]

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

(४२) जिसके पास असत्य फटक भी नहीं सकता न उसके आगे से तथा न उसके पीछे से, यह है अवतरित की हुई (अल्लाह) हिक्मत वाले एवं गुणों वाले की ओर से ।[2]

مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

(४३) आप से वही कहा जाता है जो आपसे पूर्व के रसूलों से भी कहा गया है ।[3] निःसंदेह आपका प्रभु क्षमा करने वाला [4] तथा दुखदायी

---

[1]अर्थात यह किताब जिससे मुख फेरा जा रहा है, अवरोध तथा आक्षेप लगाने वालों की निन्दा से अति उच्च तथा सभी दोषों से पवित्र है ।

[2]अर्थात वह हर प्रकार से सुरक्षित है । आगे से का अभिप्राय है कमी तथा पीछे से का अभिप्राय है अधिकता, अर्थात असत्य आगे से आकर उसमें कमी तथा पीछे से आकर न अधिक कर सकता है तथा न कोई परिवर्तन, तथा न फेरबदल करने में सफल हो सकता है । क्योंकि यह उसकी ओर से अवतरित है जो अपने कर्म तथा कथन में तत्वदर्शी है तथा प्रशंसित है । अथवा वह जिन बातों का आदेश अथवा निषेध करता है परिणाम एवं अन्त में प्रशंसनीय होती हैं अर्थात अच्छी तथा लाभप्रद हैं । (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात विगत समुदायों ने अपने पैग़म्बरों को झुठलाने में जो कुछ कहा कि यह जादूगर हैं, उन्माद ग्रस्त हैं, झूठे हैं, आदि-आदि, वही मक्का के काफ़िरों ने भी आपको कहा है । यह समझो जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आपको झुठलाना तथा आपको जादू, झूठ, उन्माद से संम्बन्धित करना नई बात नहीं है । प्रत्येक पैग़म्बर के साथ यही होता आया है । जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴾ ﴿ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴾

(अज़्ज़ारियात-५२,५३)

दूसरा अभिप्राय इसका यह है कि यह वहीं बातें हैं जो आपसे पहले रसूलों से कही गयी थीं । इसलिए कि सभी धर्म-विधान इन बातों पर एकमत रहे हैं, अपितु तौहीद (एकेश्वरवाद) एवं शुद्धता सबका सर्वप्रथम आमंत्रण रहा है । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात उन ईमान तथा तौहीद वालों के लिए जो मोक्ष के पात्र हैं ।

यातना देने वाला है ।[1]

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा यदि हम उसे ग़ैर अरबी भाषा का क़ुरआन बनाते [2] तो कहते कि इसकी आयतें स्पष्ट रूप से वर्णन क्यों नहीं की गई ?[3] यह क्या कि किताब ग़ैर अरबी तथा आप अरबी रसूल ? [4] (आप) कह दीजिए कि यह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वास्थ्यकर है, तथा जो ईमान नहीं लाते तो उनके कानों में (बहरापन) बोझ है तथा यह उन पर अंधापन है, ये वे लोग हैं जो किसी दूर स्थान से पुकारे जा रहे हैं ।[5]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ

(४५) तथा नि:संदेह हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब प्रदान की थी तो उसमें भी मतभेद किया गया तथा यदि (वह) बात न होती जो आपके प्रभु की ओर से पूर्व ही निर्धारित हो

---

[1]उनके लिए जो काफ़िर तथा अल्लाह के पैग़म्बरों के शत्रु हैं । यह आयत भी सूर: *हिज्र* की आयत ﴿نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۙ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ﴾ के समान है ।

[2]अर्थात अरबी की जगह किसी अन्य भाषा में क़ुरआन अवतरित करते ।

[3]अर्थात हमारी भाषा में क्यों नहीं कहा गया जिसे हम समझते, क्योंकि हम तो अरबी हैं, ग़ैर अरबी (विदेशी) भाषा नहीं समझते ।

[4]यह भी काफ़िरों का ही कथन है कि वह आश्चर्य करते कि रसूल तो अरबी है तथा क़ुरआन उस पर ग़ैर अरबी भाषा में अवतरित हुआ है । अभिप्राय यह है कि क़ुरआन को अरबी भाषा में अवतरित करके उसके सर्वप्रथम संबोधित अरबों के लिए कोई तर्क शेष नहीं रहने दिया है । यदि यह अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषा में होता तो वह बहाने कर सकते थे ।

[5]अर्थात जिस प्रकार दूर का व्यक्ति दूरी के कारण पुकारने वाले की आवाज़ सुनने से विवश रहता है इसी प्रकार इन लोगों की बुद्धि तथा बोध में क़ुरआन नहीं आता ।

لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾

चुकी है[1] तो उनके मध्य (कभी का) निर्णय हो चुका होता[2] यह लोग तो उसके विषय में घोर व्याकुल करने वाली शंका में हैं।[3]

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَاۤءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

(४६) जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करेगा वह अपने लाभ के लिए तथा जो बुरा कार्य करेगा उसका भार भी उसी पर है तथा आपका प्रभु बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं।[4]

---

[1]कि उनको दण्ड देने से पहले अवसर दिया जायेगा, ﴿ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ﴾ (फ़ातिर-४५)

[2]अर्थात उनको तत्क्षण दण्ड देकर नाश कर दिया जाता।

[3]अर्थात उनका इंकार बुद्धि तथा ज्ञान के कारण नहीं वरन् केवल शंका के कारण है, जो उनको व्याकुल किये रखता है।

[4]इसलिए कि वह दण्ड मात्र उसी को देता है जो पापी होता है, न कि जिसे चाहे अकारण ही यातना में ग्रस्त कर दे।